मानसिक स्वास्थ्य पर मितानिन के द्वारा किये गये प्रयास संबंधी व्यक्तिक अध्ययन/केस स्टडीस

वर्ष 2021-22

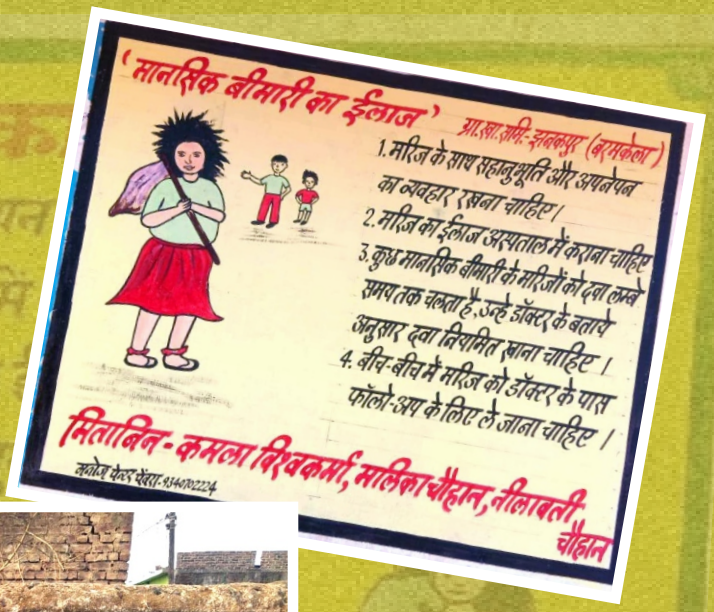

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केंद्र, रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय सूची

1. परिचय 1-2

2. मितानिनों द्वारा मानसिक रोगी की पहचान व इलाज जिनके मानव अधिकार का हनन हो रहा था 3-5

3. मितानिन द्वारा मानसिक रोगी की पहचान और इलाज के लिए रेफर किया गया 6-21

4. मितानिन द्वारा अंधविश्वास के शिकार मानसिक रोगी का इलाज करवाया गया 22-37

मानसिक स्वास्थ्य पर मितानिन के द्वारा किये गये प्रयास संबंधी व्यक्तिक अध्ययन/केस स्टडीस

सम्पूर्ण स्वास्थ्य अर्थात शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ होना। शारीरिक स्वच्छता के साथ ही साथ मानसिक रूप से स्वस्थ होना अति आवश्यक होता है। हमारे समाज में शारीरिक बीमारी की पहचान और उसके प्रति स्वीकृति होने के करण उसका इलाज करवाया जाता है। परन्तु मानसिक स्वास्थ्य को एक बीमारी के रूप में समाज के द्वारा स्वीकार नहीं करने, जागरूकता के अभाव एवं शासन के द्वारा इस तरह के रोगियों के इलाज के लिए सुविधाजनक व्यवस्था एवं प्रचार प्रसार की कमी के कारण मानसिक रोगी को पागल, भूत प्रेत का साया है कहकर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इतना ही नहीं बहुत से प्रकरणों में तो मरीज के आक्रामक व्यवहार के कारण उसे बेड़ियों से बांधकर रखा जाता है और उसके इलाज के लिए बहुत कम प्रयास किये जाते हैं। मानसिक रोग भी अन्य बीमारियों की तरह है जिसकी समय पर पहचान, स्वीकार्यता और इलाज जरुरी है। मानसिक रोगियों के मानव अधिकार का हनन न हो यह भी सुनिश्चित किया जाने की आवश्यकता है।

WHO मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने और बढ़ावा देने के लक्ष्य के तहत सरकारों का समर्थन करता है। वर्ष 2013 में विश्व स्वास्थ्य सभा (World Health Assembly) ने '2013–2020 के लिये व्यापक मानसिक स्वास्थ्य कार्य योजना' को मंजूरी दी थी। इस योजना के तहत WHO के सभी सदस्य देशों ने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने और जागरूकता बढ़ाने के लिये अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की थी।

मितानिन कार्यक्रम के प्रयास – राज्य में मितानिन कार्यक्रम के द्वारा पिछले 2–3 वर्षों से लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूकता, मरीज की पहचान और इलाज के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के पहले सभी मितानिन कार्यक्रम से जुड़े सभी साथियों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया गया एवं प्रशिक्षण सामग्री का भी वितरण किया गया है।

मानसिक स्वास्थ्य अभियान के अंतर्गत मितानिनों, ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति तथा महिला आरोग्य समिति के द्वारा गांव व शहर में पारा–मोहल्ला में दीवाल लेखन, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी फिल्म का प्रदर्शन, नुक्कड़ नाटक दिखाया जा रहा है। इसके साथ ही साथ मितानिनों द्वारा मरीजों की पहचान और सरकारी अस्पताल में इलाज के प्रयास में बहुत सारी मुश्किलें जिसमें मानसिक स्वास्थ्य के पीछे जादू–टोने की सोच को तोड़ना बहुत मुश्किल था। मानसिक रोगी के साथ मारपीट करना, बांध कर रखना आदि मानव अधिकार के हनन से जुड़े अधिकारों संबंधी प्रकरणों में इलाज के लिए प्रेरित करने में कही कुछ

हफ्ते तो कही महीने भर प्रयास करना पड़ा। मितानिनों को मानसिक रोगियों को अस्पताल ले जाने में बहुत से प्रकरणों में दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा परन्तु उन्होंने हार नही मानी और मरीजों को अस्पताल तक लेकर गयी और उनके इलाज में मदद की।

प्रारूप – यह दस्तावेज मितानिनों के द्वारा अलग–अलग मानसिक रोगियों की पहचान और इलाज के किये गए सफल प्रयास का संकलन है। दस्तावेज में कुल 75 विभिन्न व्यक्तिक अध्ययन को तीन वर्गों में संकलित किया गया है जो कि निम्न है –

- मितानिनों द्वारा मानसिक रोगी की पहचान व इलाज जिनके मानव अधिकार का हनन हो रहा था
- मितानिन द्वारा मानसिक रोगी की पहचान और इलाज के लिए रेफर किया गया
- मितानिन द्वारा अंधविश्वास के शिकार मानसिक रोगी का इलाज करवाया गया

मितानिनों द्वारा मानसिक रोगी की पहचान व इलाज जिनके मानव अधिकार का हनन हो रहा था

1. मानसिक रोगी का समय पर इलाज नहीं होने पर वे दुसरों को नुकसान भी पहुंचा सकते हैं (किल्लापारा, खैरागढ़, राजनंदगांव)

गांव की एक 28 वर्षीय महिला की मानसिक स्थिति इतनी खराब हो गयी थी कि घर वाले उसे बांध कर रखते थे। घर वालों को वह महिला काट देती थी इस वजह से वे सब डरते थे। मितानिन ने मानसिक रोग पर प्रशिक्षण लेने के बाद महिला के घर वालों को उसे जिला अस्पताल ले जाने के लिए समझाया। घर वाले महिला को जिला अस्पताल लेकर गए और उसका इलाज चालू करवाए। दवा लेने के बाद से महिला के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा है और अब घर वाले उसे खुला रखते हैं।

आरती यादव–मितानिन प्रशिक्षक

2. ग्राम तेलिपानी

गांव का एक युवक टी.वी. में आने वाला एक धारावाहिक सी.आई.डी. बहुत देखता था और उसके एक किरदार बन जाने के बारे में सोचता रहता था। वह यह धारावाहिक इतना देखता था कि उसके आलावा वह कुछ नहीं सोचता था। धारावाहिक में जिस तरीके से अपराध और अपराधी को पकड़ने के लिए बातचीत की जाती थी वह वैसे ही सोचना और बातचीत करने लगा था। युवक के माता–पिता अपने बेटे की यह हालत देखकर उसे झाड़फूंक करवाने लगे थे। झाड़फूंक से ठीक नहीं हुआ तो उसका डाक्टरी इलाज करवाए और उसे रस्सी से बांध कर रखते थे। युवक की मां ने पारा की मितानिन को बुलवाई और अपने बेटे के बारे में उसे सब जानकारी दी और मदद मांगी। मितानिन ने उन्हें समझाया की अपने बेटे की सब बात को सुना करो उसकी बात पर चिढ़ना नहीं और उसकी हर बात में हां में हां मिलाना नहीं तो वह और परेशान होगा और नुकसान पंहुचा सकता है। मितानिन ने युवक की मां से युवक को जिला अस्पताल ले जाने के लिए बोली। युवक की मां ने मितानिन को जिला अस्पताल ले जाने में सहयोग करने के लिए कहा। मितानिन युवक को उसकी मां के साथ जिला अस्पताल लेकर गयी जहां डाक्टर ने जांच के बाद एक माह की दवा दी। एक माह की दवा से युवक में कुछ सुधार हुआ। एक माह के बाद फिर से जांच के लिए युवक को लेकर गए तो डाक्टर ने फिर से एक माह की दवा दी। दवा खाने से युवक की स्थिति में सुधार हो रहा है।

सरिता जागड़े–मितानिन

3. ग्राम–मिलायीकला

30 वर्षीय लड़का जिसकी मानसिक स्थति बहुत खराब हो गयी थी। उसके पिता उसे बहुत मारते थे और बेड़ियों से बांध कर रखते थे। मितानिन ने मरीज के पिता को जिला अस्पताल ले जाने के लिए समझाया तो उसे जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल में जांच के बाद दवा शुरू की गयी। निरंतर दवा से मरीज की स्थिति में सुधार आने लगा और वह सामान्य हो गया। अभी वह बाजार में कपड़ा बेचने भी जाता है।

4. ग्राम–पी.व्ही.–92, विकासखंड–कोयलीबेडा, जिला–कांकेर

गांव का एक 22 वर्षीय युवक 12 वीं की परीक्षा पास होने के बाद पढाई का बोझ इतना ज्यादा हो गया कि वह मानसिक रोगी बन गया। युवक अपने आप से बात करता था, हंसता था, लोगों को डंडे व पत्थर से मारता था। घर वाले लड़के का झाड़फूंक करवाए परन्तु कोई आराम नहीं मिला। रायपुर के निजी अस्पताल में इलाज करवाए परन्तु फिर भी कोई सुधार नहीं हुआ तो उसका इलाज करवाना बंद कर दिए। युवक को कमरे में बंद कर बांधकर रखते थे। ऐसा नहीं करने पर वह कहीं भी चले जाता था। मितानिन ने मानसिक स्वास्थ्य अभियान के दौरान युवक के घर वालों को बहुत समझाने का प्रयास किया परन्तु वे नहीं माने। गांव में फिर समिति की बैठक की गयी जिसमें फिर से एक बार सब ने मिलकर युवक के पिता को समझाने का प्रयास किया कि कम से कम एक बार कांकेर जिला अस्पताल लेकर चलिए। मितानिन ने समझाया की जिला अस्पताल में केवल जाने आने का खर्च होगा दवाई मुफ्त में मिलती है। युवक के घर वाले सबकी बात मानकर युवक को जिला अस्पताल लेकर गए और उसका इलाज चालू करवाए। 6 माह तक दवा खाने के बाद युवक के स्वास्थ्य में बहुत सुधार हो गया। अब वह घर के काम–काज में मदद करता है।

5. मानसिक रोगी के साथ मानवता का व्यवहार किया जाना चाहिए
ग्राम–खैंदा, जिला–बलौदाबाजार

गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा के दौरान एक युवती के मानसिक रोगी होने की जानकरी मिली। युवती को परिवार वाले जंजीर से बांधकर कमरे में ताला लगाकर रखते थे। बैठक के बाद मितानिन उस परिवार से मिलने गयी और युवती के कमरे को खुलवाया उसकी जंजीर को खुलवाया व उसे बिस्किट खाने के लिए दी। युवती ने सभी के साथ बिस्किट बांटकर खायी। मितानिन ने परिवार वालों को समझाया कि युवती को इस तरह बांध कर नहीं रखे और जिला अस्पताल में मानसिक रोगियों का इलाज होने की जानकारी दी। मितानिन के समझाने पर घर वाले इलाज के लिए मान गए और मितानिन को ही अस्पताल ले जाने के लिए बोले। मितानिन ने समिति से युवती के इलाज के लिए मदद मांगी समिति के द्वारा 1000 रुपये दिए गए। मितानिन अपनी जिम्मेदारी पर युवती को दो बार अस्पताल लेकर गयी और डॉक्टर द्वारा युवती की पूरी जांच और इलाज किया गया। युवती ने मितानिन की देखरेख में 7 माह तक मानसिक स्वास्थ्य की दवा खायी और वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गयी। परिवार वाले अब उसकी शादी की तैयारी कर रहे हैं। **कौशल्या–मितानिन**

6. मानसिक रोगियों का इलाज संभव है
ग्राम–मुड़पार, विकासखंड–नरहरपुर, जिला–कांकेर

गांव की मितानिन मोतिन मण्डावी परिवार भ्रमण के लिए गई तो गांव के एक परिवार में देखा कि परिवार वाले एक महिला को बांध कर रखे हुए हैं। मितानिन ने परिवार वालों से पूछा कि आप लोग इसे बांध कर क्यों रखे हो, तो उन्होंने बताया कि अगर हम लोग इसे खुला रखेंगे तो यह अपने कपड़े उतारकर भाग जाती है और घर के बाहर कुआं है, तो उसमें गिरने का भी डर है। मितानिन ने महिला के घर वालों को समझाया की मानसिक रोगियों को ऐसे बांध के नहीं रखना

चाहिए इससे उनके स्वास्थ्य पर और बुरा असर पड़ता है। मितानिन ने साथ ही यह भी बताया कि जिला अस्पताल में डॉक्टर हैं जो कि मानसिक रोगियों का इलाज करते हैं तो आप लोग मरीज को उन्हें दिखा देना चाहिए। मितानिन की सलाह पर महिला के घर वाले महिला को जिला अस्पताल लेकर गए जहां एक दिन रखकर महिला का इलाज किया गया और उसके बाद उसे भिलाई अस्पताल लेकर गए जहां 17 दिन इलाज चला। वह महिला बिलकुल ठीक होकर अपने घर आ गयी और अब वह काम पर भी जाने लगी है। **मोतिन मण्डावी–मितानिन**

7. मितानिन ने मानसिक रोगी की पहचान कर रोगी का इलाज करवाया

ग्राम पंचायत–कोना, विकासखंड–मुंगेली, जिला–मुंगेली

गांव का एक 24 वर्षीय युवक अपनी मां के मरने के बाद से अजीब सी हरकतें जैसे बड़बड़ाना, अपने आप को मारना, रास्ते में चलने वालों को पत्थर व डंडे से मारना, अचानक हंसना–रोना व गाना, गाना करने लगा था। युवक के घर वाले झाड़फुंक करवाने बैगा के पास लेकर गए थे परन्तु वहां ठीक नहीं हुआ तो उसे बांध कर रखने लगे थे और बैगा के कहे अनुसार छड़ को गर्म कर दागने लगे थे। मानसिक स्वास्थ्य अभियान के तहत मितानिन को उस युवक के बारे में पता चला तो वह समिति के सदस्यों से चर्चा की और उनके साथ उस परिवार से मिलने के लिए गयी। मितानिन ने युवक के परिवार वालों को समझाया की यह एक बीमारी है और इसका इलाज जिला अस्पताल में निःशुल्क किया जाता है। मितानिन ने परिवार वालों को समझाया की इसका इलाज झाड़फुंक नहीं है बल्कि इसकी दवा नियमित खिलाते रहने से मरीज ठीक हो जाता है। युवक के परिवार वाले मितानिन की बात मानकर युवक का इलाज जिला अस्पताल में करवा रहे हैं। एक माह में युवक की स्थिति में काफी सुधार आया है, युवक अब पहले जैसी अजीब हरकतें नहीं कर रहा है।

8. दूसरों को मारने के डर से जंजीर में बंधा मानसिक रोगी इलाज से ठीक हो गया

गुरुघासीदास नगर वार्ड क्र. 7, भिलाई 3, चरोदा

पारा में परिवार रहता है जिसमें पति पत्नी और तीन बेटे है। जून माह से बीच वाला बेटा अपने आप में बड़बड़ाने लगा था, किसी से बात नहीं करता था, सामान को तोड़ देता था और किसी को कुछ भी फेंक कर मार देता था। परिवार वाले अपने बेटे का झाड़फूंक करवाने लगे और उसने 10 हजार रुपये भी खर्च कर दिए परन्तु बेटे के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं आया। मितानिन को जब पता चला तो वह उनके घर गयी। घर में उसने देखा की परिवार वालों ने अपने बेटे को डर के मारे जंजीर में बांध कर रखा था। मितानिन ने लड़के के परिवार वालों को अपने बेटे को जंजीर को खोलने के लिए समझाया परन्तु वे किसी को भी मार देगा इस डर से उसे नहीं खोले। मितानिन ने उन्हें झाड़फूंक नहीं बल्कि अस्पताल में इलाज के लिए समझाया लेकिन वे तैयार नहीं हुए। मितानिन, एम.टी. के साथ उनके घर गयी और उन्हें फिर से समझायी की मानसिक रोग का इलाज है तो परिवार वाले इलाज करवाने के लिए मान गए। मितानिन लड़के को परिवार वालों के साथ जिला अस्पताल लेकर गयी। अस्पताल में एक माह की दवा दी गयी और वहां से रेफर कर शंकराचार्य अस्पताल में 15 दिनों के लिए भर्ती रखकर इलाज किया गया। डेढ़ माह तक इलाज के बाद लड़के के स्वास्थ्य में बहुत अच्छा सुधार आया। लड़का अब वह काम पर जाने लगा है और अपने परिवार का सहयोग कर रहा है।

मितानिन द्वारा मानसिक रोगी की पहचान और इलाज के लिए रेफर किया गया

1. महामाया वार्ड क्र. 7 चरोदा

गांव की एक बेटी की शादी को 2 साल हुए थे और उसके ससुराल वाले उसे मायके में छोड़कर चले गए थे। शहर आने के एक हफ्ते बाद लड़की की तबियत खराब हुई तो मितानिन को बुलवाया गया। मितानिन लड़की को सरकारी अस्पताल लेकर गयी और जांच करवाई जिसमें पता चला की लड़की गर्भवती है। मितानिन 8 दिन बाद जब फिर से लड़की से मिलने गई तो लड़की में बहुत बदलाव आ गए थे जैसे कभी वह बहुत बात करती थी तो कभी एक दम चुप बैठकर सोचती रहती थी। मितानिन ने फिर लड़की की मां से पूछा कि लड़की को ससुराल वाले मायके क्यों छोड़कर गए ? लड़की की मां ने बताया कि ससुराल वाले बोलते हैं कि लड़की के मायके वाले उस पर कुछ जादू–टोना कर दिए हैं इसलिए तु वही जाकर झाडफूंक करवा कर आना। मितानिन ने लड़की की मां से पूछा कि आपने झडफूंक करवाया है क्या, तो लड़की की मां ने बोला कि 3000 रुपये खर्च कर करवाए थे पर कोई फर्क नहीं पड़ा। मितानिन ने लड़की की मां को समझाया की लड़की को डाक्टरी इलाज की जरुरत है और उसे जिला अस्पताल ले जाना पड़ेगा। लड़की की मां मान गयी और उसे दुर्ग जिला अस्पताल ले जाने वाले थे की उसके ससुराल वाले उसे घर ले जाने आ गए। लड़की की मां ने मितानिन की कही बात को उसकी सास को बताया तो वह भी मान गयी क्योंकि वे लोग भी झाड़फूंक करवाए थे। मितानिन लड़की को जिला अस्पताल लेकर गयी जहा उसका इलाज चालू हुआ। लड़की ने 3 माह दवा का कोर्स पूरा किया और वह अब बिलकुल ठीक है और अपने ससुराल में खुश है।

तमेश्वरी वर्मा–मितानिन

2. दोस्त की मौत के सदमे से हुआ युवक मानसिक रोगी

ग्राम–खुर्सीपार, विकासखंड–डोंगरगांव, जिला–राजनांदगांव

18 वर्षीय एक युवक अपने दोस्तों के साथ मेला देखने गया था और वापसी में सड़क दुर्घटना में उसके करीबी दोस्त की मौत हो गयी। उसके बाद से वह युवक अकेले रहना, किसी को भी एकटक देखते रहना, किसी ऐसी चीज के बारे में बताना जो किसी और को दिखाई और सुनाई नहीं देती थी, भूख नहीं लगना और नींद नहीं आने की समस्या होने लगी। पारा की मितानिन को परिवार भ्रमण के दौरान युवक के घर वालों ने युवक की स्थिति के बारे में बताया। मितानिन ने युवक के बारे में जानकारी लेने के बाद परिवार वालों को समझाया की यह भी एक तरह की बीमारी है और जिला अस्पताल में इसका इलाज हो जाएगा। युवक के घर वाले मितानिन की बात नहीं माने और उसका झाड़फूंक करवाने लगे। झाड़फूंक से युवक की स्थिति और बिगड़ गयी। मितानिन के बार–बार समझाने पर घर वाले युवक को सरकारी अस्पताल नहीं ले जाकर निजी अस्पताल लेकर गए। युवक का इलाज चालू होने के कुछ समय बाद ही युवक की मानसिक स्थिति में सुधार आने लगा। अब वह युवक पहले से ठीक है।

गोदावरी साहू–मितानिन प्रशिक्षक

3. ग्राम जेवरतला, विकासखंड–गुरुर, जिला–बालोद

गांव की एक पढ़ाई करने वाली लड़की अपनी पढ़ाई को लेकर बहुत गंभीर थी और पढ़ाई को लेकर बहुत टेंशन भी लेती थी। एक दिन वह अचानक से बड़बड़ाने लगी, कभी एक जगह उदास बैठ जाती थी, घर वालों को गाली देने लगी थी। घर वालों को लगा कि उसके ऊपर किसी ने जादू टोना कर दिया है तो वे झाड़फूंक करवाने लग गए। परन्तु लड़की की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। गांव की मितानिनों को जब पता चला तो उन्होंने लड़की के घर वालों को अस्पताल लेकर जाने के लिए समझाया वे लोग नहीं मान रहे थे उनका कहना था कि उनकी लड़की पर किसी ने जादू कर दिया है। मितानिनों और एम.टी. के बार–बार समझाने पर वे लोग माने और देवादा अस्पताल लेकर गए। वहां लड़की का इलाज चालू होने के कुछ ही दिन में लड़की की स्थिति में सुधार होने लगा। आज वह फिर से पढ़ाई करने लगी है और अपनी मां का खेत के काम में भी साथ देती है। **राजेश्वरी साहू–एम.टी.**

4. ग्राम खैरी (आर), विकासखंड–भाटापारा, जिला–बलौदाबाजार

गांव की एक 26 वर्षीय महिला के प्रसव के बाद उसकी मानसिक स्थिति खराब हो गयी थी। यह महिला अपने बच्चे को दूध नहीं पिलाती थी, अकेले में बड़बड़ाती रहती थी। घर वालों पर आरोप लगाती थी कि वे लोग उसे मार देंगे। महिला के घर वाले परेशान हो गए थे कि उनकी बहु को अचानक क्या हो गया है। महिला के घर वाले 3–4 बैगा गुनिया को दिखाने लगे थे और झाड़फूंक करवाने लगे थे। सभी बैगा यह कहने लगे थे कि उनके घर में भूत प्रेत का बसेरा है और महिला को घर से बाहर रखना होगा तो ही सब ठीक होगा। घर वालों ने महिला को एक माह तक घर से बाहर में रखा और झाड़फूंक में 30–40 हजार रुपये खर्च किये। मितानिन के बार–बार समझाने पर भी घर वाले झाड़फूंक करवाते रहे। एक दिन मितानिन ने महिला के पति को अपने घर में बुलाकर समझाया की झाड़फूंक तो करवा रहे हो एक बार जिला अस्पतला में भी दिखाकर देख लो। महिला के पति ने अपने माता–पिता को भी जिला अस्पताल ले जाने के लिए समझाया और वे लोग महिला को जिला अस्पताल में डॉक्टर के पास जांच के लिए लेकर गए। जिला अस्पताल में महिला का इलाज चालू किया गया। कुछ समय बाद ही महिला की तबियत में सुधार होने लगा। अब महिला अपने बच्चे की अच्छे से देखरेख करने लगी है। **निराशा ध्रुव–एम.टी.**

5. ग्राम–जगता कापा, विकासखंड–पथरिया, जिला–मुंगेली

गांव के एक परिवार के पुरुष वार्ड पंच बनने की खुशी में बहुत ज्यादा बात करने लगे थे। पुरुष के पिता को जब कुछ अजीब लगा तो उन्होंने जादू टोना होने का शक करते हुए बैगा से झाड़फूंक करवाने लग गए। झाड़फूंक से पुरुष की स्थिति और बिगड़ने लगी। पारा की मितानिन और एम.टी. को जब पता चला तो वे लोग मरीज के पिता से मिले और उन्हें समझाया की यह भी एक बीमारी है जिसका इलाज अन्य बीमारियों की तरह होता है। मितानिन ने मानसिक रोग के बारे में भी उन्हें समझाया और उन्हें झाड़फूंक नहीं कराने और अस्पताल में इलाज करवाने की सलाह दी बहुत समझाने पर मरीज के पिता मरीज को तुमान बिलासपुर अस्पताल लेकर गए और इलाज चालू करवाए। मरीज की स्थिति में अभी 50 प्रतिशत सुधार आ गया है और अभी भी इलाज जारी है।

6. ग्राम पंचायत–रामबाड़े, आश्रित गांव खम्हारडीह, विकासखंड–पथरिया, जिला–मुंगेली

गांव में एक परिवार रहता है जिसमें पति–पत्नी उनके दो पुत्र और दादा है। यह परिवार खेती मजदूरी कर अपना जीवन यापन करते थे। 10 वर्ष पहले पति कहीं चला गया और आज तक नहीं लौटा। किसी तरह मां और दादा ने बच्चों का पालन–पोषण किया और दोनों बेटों की शादी करवा दी। बड़े बेटे की शादी के 5 साल बाद उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। बहु की मृत्यु के बाद महिला की मानसिक स्थिति बिगड़ने लगी। महिला के घर वाले झोलाछाप डॉक्टर और बैगा से इलाज करवाने लग गए। इसी दौरान पारा की मितानिन ने पारा बैठक में मानसिक रोग पर अपने पारा के लोगों को जानकारी दी और समझाया की यह भी एक बीमारी है जो झाड़फूंक से नहीं बल्कि दवाईयों से ठीक होता है। पारा बैठक में मानसिक रोगी महिला के परिवार के सदस्य भी भाग लिए थे। बैठक में मानसिक रोग के बारे में सुनने के बाद उस सदस्य ने घर में जाकर सभी को इसके इलाज के बारे में बताया। महिला के घर वाले फिर मितानिन से सलाह करने के बाद महिला को इलाज के लिए जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल में महिला के जांच के बाद दवा चालू की गयी। अभी वह महिला पहले से ठीक है और इलाज जारी है।

मूलचंद साहू–एम.टी.

7. ग्राम–कालेरी, विकासखंड–गुरुर, जिला–बालोद

गांव की एक लड़की जिसकी शादी 3 साल पहले हुई थी। शादी के कुछ समय बाद लड़की की तबियत खराब हो गयी थी। वह समय पर खाना नहीं खाती थी, इधर–उधर घुमती रहती थी, लोगों को गाली देती थी, बात–बात पर चिड़चिड़ाती रहती थी। लड़की में हो रहे इन सब बदलावों को देखते हुए उसके सुसराल वाले उसे मायके छोड़कर चले गए। लड़की के माता–पिता उसे बैगा को दिखा रहे थे परन्तु उससे लड़की के तबियत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। गांव की मितानिन प्रशिक्षक और मितानिन महिला के घर परिवार भ्रमण के लिए गए तो उन्होंने लड़की के परिवार वालों को पी.एच.सी. में दिखने की सलाह दिए। लड़की के घर वाले लड़की को पी.एच.सी. पुरुर में दिखाए और उसे 15 दिन की दवा दी गयी। 15 दिन की दवा खाने के बाद लड़की के स्वास्थ्य में बहुत सुधर हुआ। अब वह इधर–उधर नहीं घुमती और घर में आराम करती है। डॉक्टर ने 6 माह तक इलाज चलने की बात कही है।

सविता साहू–प्रशिक्षक

8. ग्राम–अड़जाल, विकासखंड–डौंडी, जिला–बालोद

गांव का एक 19 वर्षीय युवक अपने माता–पिता और बहन के साथ रहता है। गांव में जब रोजगार गारंटी का काम खुला तो वह भी काम करने गया। दो दिन काम में ठीक से गया और तीसरे दिन से वह अपने आप चिल्लाने लग गया और इधर–उधर जाने लगा। घर वाले पुरे समय उसकी निगरानी करते थे। अगर थोड़ा सा नजर हटती थी तो वह मोटर साईकिल उठाकर तेजी

से चलाता था और हैंडल से हाथ हटाकर पैर दोनों मोड़ कर गाड़ी चलाता था। मां ने बैगा को दिखाया परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ वह लड़का सुनसान जगह देखकर भागता था। पारा की मितानिन ने लड़के की मां को समझाया कि बैगा के साथ–साथ एक बार अस्पताल में भी दिखा लो। मां ने बेटे को देवादा अस्पताल लेकर गयी। देवादा में लड़के को भर्ती किया गया और 20 दिन रखा गया। 22 दिन में वह लड़का ठीक हो गया और उसकी अस्पताल से छुट्टी की गयी। अभी वह लड़का ठीक है। **धिरजा बाई–मितानिन, पंवारा कोठारी–मितानिन प्रशिक्षक**

9. ग्राम–माड़िया कट्टा, विकासखंड–डौंडी, जिला–बालोद

गांव में एक पुरुष की मानसिक स्थिति खराब हो गयी थी। यह पुरुष कभी एक दम ठीक रहता था तो कभी, सभी को गाली देता था। अपनी पत्नी से झगड़ता था, कभी बोलता था कि वह लोगों को काट देगा तो कभी बोलता था कि गांव वाले उसे खा जाएंगे। मितानिन प्रशिक्षक और मितानिन परिवार वालों को बार–बार अस्पताल ले जाने के लिए सलाह देते रहे परन्तु घर वाले बैगा के पास ही ले जाते थे। उसके घर में भाई लोग उसे बहुत मारे थे। एक दिन उसने मितानिन प्रशिक्षक को फोन कर बताया कि उसके घर वाले उसे बहुत मार रहे हैं आप पुलिस में फोन कर रिपोर्ट कर दो, ये लोग मुझे मार देंगे। वह एकदम ठीक से बात कर रहा था। मितानिन प्रशिक्षक ने मितानिन को फोन कर मरीज को तुरंत अस्पताल ले जाने के लिए बोली। मितानिन के द्वारा घर वालों को मरीज को इलाज के लिए अस्पताल ले जाने के लिए निरंतर समझाते रहा और फिर एक माह के बाद उसे रायपुर अस्पताल लेकर गए।

10. ग्राम–गिरता, विकासखंड–नवागढ़, जिला–बेमेतरा

गांव में एक 30 वर्षीय पुरुष बहुत ज्यादा नशा करता था। पुरुष के माता–पिता का 12 वर्ष पहले देहांत हो गया था। पिछले 10 माह से पुरुष गांजा, शराब और तंबाखू हर तरह का नशा कर रहा था और बड़बड़ाता और लोगों को गाली देता रहता था। इसी दौरान मानसिक स्वास्थ्य अभियान किया गया और ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक की गयी। बैठक में मानसिक रोग पर चर्चा की गयी। बैठक में मरीज की दादी भी आई थी और उसने अपने पोते के बारे में बताया कि वह आज कल अपना ध्यान नहीं रखता है गुमसुम रहता है। गंदे कपड़े पहना रहता है व गाली–गलौच करता है। मरीज की दादी ने बताया कि मैंने अपने पोते का इलाज भी करवाया, झाड़फूंक भी करवाई पर वह ठीक नहीं हुआ। अब मरीज की दादी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने की वजह से वह इलाज नहीं करवा पा रही है। बैठक के बाद मितानिन और मितानिन प्रशिक्षक मरीज के घर गए और उसकी दादी को जिला अस्पताल में निःशुल्क इलाज के बारे में बताये। मरीज की दादी इलाज करवाने के लिए तैयार हो गई। मितानिन मरीज को जिला अस्पताल बेमेतरा लेकर गयी जहां 20 दिन की दवा दी गयी। 20 दिन के बाद दोबारा जांच के लिए मरीज को लेकर गए तो जाने आने के लिए समिति के द्वारा 50 रूपये की मदद की गयी। मरीज दवा खाने के बाद से ठीक है। अब वह बेकार में गाली–गलौच नहीं करता और घर में रहता है। **गौरी वर्मा**

11. ग्राम–राजगमार, जिला–कोरबा

गांव का एक 27 वर्षीय युवक घर वालों से छुपा कर शराब, गांजा और बहुत तरह का नशा करता था। लगभग 2 वर्ष पहले तक वह पोड़ी उपरोड़ा में सिविल इंजीनियर के पद पर कार्य कर रहा था। उसने अपनी बहन की शादी करवाई। इसके बाद उसकी मानसिक स्थिति खराब होने लगी तो वह अपनी बाईक जंगल में छोड़कर 5 दिन तक जंगल में भटकता रहा। गांव के किसी व्यक्ति को उसके गाड़ी के कागज मिले तो उसने पिता को फोन किया और जंगल में गाड़ी 5 दिन से गिरी होने की जानकरी दी। युवक के पिता ने उसके बाद बेटे की खोजबीन चालू करवाई और युवक बेहोश अवस्था में रायगढ़ के जंगल में मिला। घर में लाने के बाद युवक का झाड़फूंक और डॉक्टरी इलाज करवाया गया। थोड़ा ठीक होने के बाद वह घर वालों से झगड़ा करने लगा। फिर से बैगा द्वारा झाड़फूंक करवाया गया परन्तु युवक ठीक नहीं हुआ। युवक को बिलासपुर के सेंदरी अस्पताल लेकर गए। यहां इलाज से ठीक हुआ परन्तु वह उदास रहने लगा और नशे की मांग करने लगा और उसकी दवा छूट गयी। एक माह बाद युवक के पिता जिला समन्वयक से मिले और उन्होंने बताया कि उनके बेटे की तबियत ठीक नहीं है तो फिर उन्हें जिला अस्पताल में डॉक्टर को दिखाने के लिए बोला गया और रोज डॉक्टर उपलब्ध होने की जानकरी दी गयी। परिवार वाले युवक को जिला अस्पताल लेकर गए जहां इलाज चालू किया गया। इलाज के कुछ समय बाद युवक ठीक हो गया और अपने काम को भी ठीक से कर रहा है।

13. ग्राम–कदमनारा, विकासखंड–बैकुन्ठपुर, जिला–कोरिया

गांव की एक 40 वर्ष की महिला पिछले 14 साल से मानसिक रोगी थी। महिला के परिवार वाले तब से लेकर अब तक झाड़फूंक करवा रहे थे। झाड़फूंक में काफी पैसा खर्च कर चुके थे लेकिन उसके सेहत में कोई सुधार नही हो रहा था। परिवार वाले परेशान हो चुके थे, आर्थिक स्थिति भी खराब हो चुकी थी। बच्चे पढाई भी नहीं कर पा रहे थे और उनको घर भी संभालना पड रहा था। अब गांव और परिवार वाले उसे पूरी तरह से पागल मानने लगे थे महिला भी अस्त–व्यस्त इधर उधर घूमती बड़बड़ाती रहती थी। इसी दौरान एक दिन मितानिन उनके घर परिवार भ्रमण करने गई। परिवार के लोगों को बताई कि मानसिक बीमारी भी और बीमारी की तरह एक बीमारी है और सभी सरकारी अस्पताल में इसका इलाज संभव है। परिवार वाले काफी परेशान हो चुके थे लेकिन फिर भी मितानिन की बात मानकर महिला को जिला अस्पताल बैकुंठपुर ले जाने को तैयार हो गए और उसे डॉक्टर को दिखाये। डॉक्टर मरीज को देख कर दवाई लिखे और परिवार के सदस्यों को नियमित दवा खिलाने और माह में एक बार अस्पताल आने की सलाह दिए। महिला नियमित दवा ले रही है और उसके सेहत में काफी सुधार है।

13. ग्राम–गम्हरिया, विकासखण्ड–लोदाम, जिला–जशपुर

गांव की एक महिला का डेढ़ वर्ष से मानसिक स्वास्थ्य खराब था। महिला अपने पति से बात तक करना पसंद नहीं करतीं थीं। पति जब कभी बात करने की कोशिश करता महिला

चीखती चिल्लाती व घर का समान बाहर फेकने लगती थी। महिला अपनी दो वर्ष की बेटी का भी ध्यान नही रख पा रही थी। पति बहुत परेशान था वह यह सोचता था कि उसकी पत्नी पर किसी ने जादू–टोना कर दिया है। पति अपनी पत्नी को झाड़फूंक करवाता व जड़ी–बूटी का दवा बनवाकर खिला रहा था, लेकिन फिर भी उसकी सेहत में कोई सुधार नही आ रहा था। पति बहुत परेशान हो गया था। क्योंकि उसे पत्नी, बच्ची, व घर को खुद संभालना पड़ रहा था। इसी दौरान एक दिन एम.टी. व मितानिन उनके घर परिवार भ्रमण के लिए गयी। पुरुष ने अपनी पत्नी के बारे में उनको बताया। एम.टी. व मितानिन ने पुरुष को बताया कि उनकी पत्नी को कोई जादू–टोना नहीं किया गया है। यह भी अन्य बीमारी की तरह एक बीमारी है और इसका इलाज संभव है और जिला अस्पताल में मुफ्त में किया जाता है। पुरुष उनकी बातों को मानकर अपनी पत्नी को जिला अस्पताल जशपुर लेकर गया। डॉक्टर मरीज को देखकर दवा दिए और नियमित दवा खिलाने की सलाह दिए। पुरुष मितानिन की मदद से नियमित अपनी पत्नी को दवा खिलाने लगा और माह में एक बार डॉक्टर को दिखाने लगा। आज दवा खाते महिला को चार माह हो गया है अब वह ठीक हो गयी है। वह अपने बच्चों का ध्यान भी रख पा रही है। पति व पत्नि बहुत खुश हैं कि मितानिन दीदी की वजह से आज वो ठीक हो पायी है, और वे मितानिन दीदी को अपना सुख दु:ख का साथी मानते हैं।

14. ग्राम व पंचायत–गिरांग, विकासखण्ड–शपुर, जिला–जशपुर

गांव की आंगनबाड़ी सहायिका है जिसके पति की मृत्यु 5–6 वर्ष पहले हुयी थी। 8–9 माह से सहायिका की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। वह लोगों के साथ उठना बैठना पहले की तरह नहीं करती थी। जब लोग उसके पास आते थे तो वह वहां से चली जाती थी। उसे एक दिन जंगल में एक चमकती हुई चीज दिखाई दी। पास जाने पर किसी महिला की श्रृंगार का पूरा समान था। सहायिका उसे अपने घर लेकर आई जिसे पहन कर गांव में घुमा करती थी। उसमें नया साड़ी, चुड़ी, पायल, आदि समान था। उसके घर वाले जादू–टोना कर दिए हैं बोलकर झाड़फूंक करवाये किन्तु वह ठीक नहीं हुई थी। एक दिन कार्यकर्ता, बच्चे छुट्टी होकर घर चले गये और सहायिका बाहर है, सोचकर अंदर से उसे बंद कर दी। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता रजिस्टर लेने के लिए केन्द्र गई वहां सहायिका नहीं दिखाई दी। घर जा कर पूछी तो घर वाले बोले कि सहायिका तो घर नहीं आई है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ने केन्द्र में जाकर खिड़की से झांक कर देखा तो वहां सहायिका फांसी का फंदा लगा रही थी। यह देख कर कार्यकर्ता आसपास के लोगों को आवाज लगायी। सहायिका फंदा में झूली उसी समय फंदा को मशाल से जला दिया गया तथा उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। लेकिन अभी भी वह ठीक नहीं थी। एक दिन व्ही.एच. एस.एन.सी. बैठक में सहायिका के बेटी को एम.टी., एस.पी.एस. मितानिन मिलकर समझाए तथा मां को अस्पताल में इलाज के लिए बोला गया लेकिन वे नहीं माने। मितानिन व एम.टी. दोबारा जाकर समझाकर अस्पताल भेजे सहायिका अब निरंतर दवाई खा रही है तथा ठीक भी हो गई है, और वह आंगनबाड़ी केन्द्र में खाना बनाकर खिला रही है।

15. ग्राम–तारातहरा, विकासखंड–मनेन्द्रगढ़, जिला–कोरिया

गांव की एक 18 वर्षीय युवती गंभीर रूप से मानसिक रोग का शिकार हो चुकी थी। गांव की मितानिन, एम.टी. और बी.सी. सभी ने युवती के माता–पिता को जिला अस्पताल में इलाज के लिए ले जाने के लिए समझाए परन्तु वे लोग नहीं माने। युवती के माता–पिता ने एक साधु को अपने घर में रख लिया था जो युवती का झाड़फूंक कर रहा था। साधु ने युवती के माता–पिता को यह बोल दिया था कि वह उनकी बेटी को ठीक कर देगा। परन्तु लड़की की हालत और बिगड़ रही थी। मितानिन तीन दिन के बाद फिर से उनके घर गयी तो पता चला कि साधु और युवती के पिता युवती को जंगल की एक मंदिर में ले जाकर रखे हैं। इसी बीच मंदिर के पास गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक की गयी। बैठक में एस.पी.एस. को जानकारी मिली कि एक लड़की को उसके पिता और साधु मंदिर में रखे हैं। दूसरे दिन समिति के पूरे सदस्य मिलकर मंदिर गए तो देखे कि युवती न खाना खा पा रही है न ही बोल रही है। लड़की की हालत देखकर फिर से एम.टी. और समिति के सदस्यों और मितानिन ने युवती के पिता को समझाया की आपकी बेटी को कोई जादू टोना नहीं किया है इसे मानसिक रोग हो गया है। मितानिन ने युवती के पिता को अपनी बेटी को जिला अस्पताल ले जाने के लिए समझाई। युवती को फिर जिला अस्पताल ले जाया गया और डॉक्टर ने जांच कर दवा चालू की। कुछ ही दिन में युवती खाना–खाना, बात करना काम करना चालू कर दी अब वह ठीक है।

सुखमनी–बी.सी., इलीसबा–एस.पी.एस.

16. ग्राम–डगनिया, विकासखंड–पाटन, जिला–दुर्ग

गांव में एक लड़की की शादी हुयी। शादी के दो माह तक सब ठीक था परन्तु उसके बाद से वह गुमसुम रहना, किसी से बात नहीं करना, कोई उससे बात करे तो उससे गाली–गलौच करना, एकटक घूर कर देखना आदि हरकतें करने लगी थी। मितानिन को पता चला तो उसने परिवार वालों से महिला को जिला अस्पताल ले जाने के लिए समझाया परन्तु वे लोग नहीं माने और झाड़फूंक करवाने लगे और उस पर 30 हजार रुपये खर्च कर डाले। मितानिन अपनी एम.टी. के साथ भी जाकर महिला के घर वालों को समझाई और बार–बार परिवार भ्रमण कर भी समझाती रही कि बैगा गुनिया में पैसा खर्च करके तो कुछ ठीक नहीं हुआ तो एक बार जिला अस्पताल लेकर चलो वहां भी कोशिश करके देख लो। महिला के घर वालों ने सोचा बैगा पर इतना पैसा खर्च किया कुछ नहीं हुआ तो एक बार अस्पताल ले जाकर देखते हैं। मितानिन महिला को जिला अस्पताल लेकर गयी अस्पताल ले जाते समय मितानिन ने महिला की मां से पूछा कि महिला पहले से कोई दवा खा रही थी क्या ? तब महिला की मां ने बताया कि उनकी बेटी का मानसिक रोग का इलाज पहले से चल रहा था परन्तु ससुराल जाने पर इसने दवा खाना छोड़ दी थी। इसलिए इसकी स्थिति खराब हो गयी थी। जिला अस्पताल में मरीज की फिर से जांच की गयी और दवा शुरू की गयी। हर सप्ताह मरीज को अस्पताल जांच के लिए लेकर जाते हैं। अभी वह ठीक है और सब से ठीक से बात करती है।

तुलसी निषाद–एस.पी.एस.

17. बाजार पार, वार्ड क्रामंक–11, सरायपाली, जिला–महासमुंद

पारा में मितानिन के साथ परिवार भ्रमण के दौरान एम.टी. को एक मानसिक रोगी महिला के बारे में पता चला। इस महिला की 5 वर्ष से मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। इस महिला के 5 व 7 साल के दो बच्चे हैं जिनकी वह देखभाल नहीं करती थी, उन्हें मारती पीटती थी। इस वजह से बच्चे मां के पास आने से डरते थे। पति झाड़फूंक करवा रहा था कुछ असर नहीं हुआ तो उसने ऐसे ही छोड़ दिया। पति ने भी उसके ठीक होने की आशा छोड़ दी थी। पत्नी की स्थिति को देखते हुए पति अपनी पत्नी को घर से बाहर नहीं निकलने लोगों के साथ बैठने नहीं देता था। इसी दौरान मनोरोग वाले डॉक्टर सी.एच.सी. सरायपाली आने वाले थे। एम.टी. ने अपनी मितानिन को बोला कि महिला को सी.एच.सी. लेकर आओ। मितानिन ने महिला के पति को जाकर समझाया परन्तु उसने यह कहकर मना कर दिया कि कोई बीमारी होती तो ले जाता परन्तु इसे तो भूत प्रेत ने पकड़ लिया है और डॉक्टर भूत प्रेत नहीं भगा सकता। दूसरे दिन फिर से एम. टी. और मितानीन उसके घर गए क्योंकि मनोरोग वाले डॉक्टर रोज सरायपाली नहीं आते हैं। मितानिन और एम.टी. ने फिर से महिला के पति से बात की और उन्हें समझाया की डॉक्टर रोज नहीं आते हैं और एक बार इलाज करवा कर देख लो अगर ठीक नहीं लगा तो मत इलाज करवाना। फिर महिला के पति ने हां कर दी। महिला को अस्पताल लेकर गए और जांच और इलाज के बाद महिला की काउंसिलिंग की गयी और 7 दिन की दवा दी गयी। महिला के पति ने उसे पूरी दवा समय पर खिलाई और 7 दिन की दवा खाने के बाद ही महिला पूरी तरह ठीक हो गयी। महिला ने बच्चों की देखरेख, खाना पकाना ठीक से बातचीत करना शुरू कर दिया। 7 दिन के बाद महिला का पति बिना किसी को बताए दवा लेने चला गया परन्तु सी.एच.सी. वालों ने जिला अस्पताल में दवा मिलने की बात बोली। महिला का पति मितानिन के पास जाकर उसे पहले को धन्यवाद दिया और सी.एच.सी. में दवा नहीं मिलने की जानकरी दी। मितानिन ने महिला के पति को महासमुंद से बी.सी. के माध्यम से दवा मंगवा देने का आश्वासन दिया। महिला अब नियमित दवा ले रही है और स्वस्थ है।

रेखा उईके–मितानिन

18. ग्राम–रामाडबरी, पंचायत–बम्बुरडीह, जिला–महासमुंद

गांव के ही पंचायत के प्रतिनिधि और उनकी पत्नी दोनों ही मानसिक रोग से पीड़ित थे। वे अपना झाड़फूंक से इलाज करवा रहे थे। मितानिन को जब पता चला तो वह उनको अस्पताल में इलाज के लिए समझाई परन्तु वे नहीं माने। मितानिन ने अपनी एम.टी. को बुलाया और वे दोनों मिलकर दोनों पति–पत्नी को इलाज के लिए समझाने गए। पुरुष का कहना था कि वह 4 माह से जहां इलाज करवा रहा है वहां उसको इलाज से आराम मिल रहा है और बहुत पैसा भी खर्च हो गया है। उसने यह भी कहा कि अब वह और कही इलाज के लिए नहीं जाएगा और सरकारी अस्पताल में उसे नहीं लगता है कि वे ठीक होंगे। एम.टी. ने उनसे बातचीत की और समस्या पूछी। उन्होंने जो भी बताया उससे उनमें मानसिक रोग के लक्षण दिखाई पड़े। मितानिन ने उन्हें समझाया की आप को एक तरह की बीमारी है और इसका इलाज अस्पताल में हो जाएगा। लेकिन

वह नहीं माने। एक माह बाद उसी पुरुष का एम.टी. के पास फोन आया कि वह सरकारी अस्पताल में इलाज के लिए जाना चाहता है। डॉक्टर ने दोनों पति–पत्नी से बातचीत की और मितानिन और एम.टी. को बताया कि आप लोग समय पर इन्हें लेकर आ गए नहीं तो ये गंभीर मानिसक रोग का शिकार हो सकते थे। डॉक्टर ने दोनों को दवा दी। दवा खाने के बाद से दोनों पति–पत्नी ठीक है। मितानिन और एम.टी. को धन्यवाद देते हैं।

बिसरौतिन–मितानिन, खुशबून–एम.टी.

19. ग्राम–खेलीडीही, दुर्ग

गांव में एक युवक पढाई में बहुत होशियार था उसने 10 वीं तक पढाई की और उसके बाद आई.टी.आई. किया। युवक का बी.एस.पी. से काल लेटर आया। उसके बाद से युवक अजीब सी हरकते करने लगा जैसे अपने से बात करना, हंसना आदि। घर वाले झाड़फूंक करवाने लगे उन्हें मानसिक रोग हो सकता है यह समझ में ही नहीं आया। युवक का एक भाई एच.एस.सी.एल. में काम करता था उसका वेतन भी कम था और परिवार बड़ा होने के कारण वह भी भाई के इलाज पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पा रहा था। गांव में उसकी एक बहन रहती थी वह युवक की देखभाल करती थी। गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक हुई जिसमें युवक की बहन को बुलाकर मानसिक रोग का इलाज जिला अस्पताल में निःशुल्क होता है कि जानकरी दी गयी। बहन ने कहा कि वह नहीं ले जा पाएगी तो मितानिन और एम.टी. युवक को जिला अस्पताल लेकर गये। जिला अस्पताल में डॉक्टर ने युवक को देखकर बिलासपुर सेंदरी ले जाने के लिए कहा। मितानिन और एम.टी. दोनों बिलासपुर ले जाने में असमर्थ थे तो उन्होंने जिला अस्पताल की डॉक्टर से निवेदन कर वहीं इलाज करने के लिए कहा। डॉक्टर ने युवक को दवा दे दी जिसमें से एक दवा तो जिला अस्पताल में मिल गयी परन्तु एक दवा बाहर से खरीदनी पड़ी। नियमित दवा खाने से युवक अभी ठीक है। युवक के परिवार वाले युवक को ठीक होते देख खुश है और इलाज के लिए नियमित जा रहे हैं।

भुनेश्वरी वर्मा–बी.सी.

20. ग्राम–जामगांव, विकासखंड–पाटन, जिला–दुर्ग

गांव का एक 38 वर्षीय पुरुष पिछले एक वर्ष से अपनी पत्नी पर बहुत शक करने लगा था और उसके साथ मारपीट भी करता था। गाली भी बहुत देता था और धीरे–धीरे वह गुमसुम रहने लगा, किसी से बात नहीं करता था, रात भर जागता रहता था। पुरुष को चुपचाप रहते देख एक दिन मितानिन उससे बात करने के लिए गई तो उसने बात नहीं की। मितानिन ने परिवार वालों से पुरुष को अस्पताल ले जाने के लिए कहा था परन्तु वे लोग झाड़फूंक करवा रहे थे। मितानिन ने फिर से पुरुष के घर वालों को समझाया की इतने दिनों से झाडफूंक करवाने से जब वह ठीक नहीं हुआ तो एक बार जिला अस्पताल लेकर जाओ। पुरुष के घर वाले मान गए और मितानिन उसे दुर्ग जिला अस्पताल लेकर गयी। जिला अस्पताल में डॉक्टर ने पुरुष की काउंसलिंग की और उसे एक माह की दवा दी। 20 दिन की दवा खाने के बाद पुरुष ने सामान्य तरीके से सबसे बात करना शुरू कर दिया और अपनी पत्नी के साथ भी मार–पीट नहीं कर रहा था।

तुलसी निषाद

21. ग्राम पंचायत–तोरला, जिला–महासमुंद

गांव का एक 41 वर्षीय पुरुष दो बार आत्महत्या का प्रयास कर चूका था। उसके घर वाले उसे दोनों बार बचा लिए। उसकी पत्नी इस बात से बहुत परेशान रहती थी। पुरुष के द्वारा आत्महत्या के प्रयास की। बात धीरे–धीरे पूरे गांव में फैल गयी और मितानिन को जब पता चला तो वह उनके घर मिलने के लिए गयी। मितानिन ने उसकी पत्नी से उसके पति के बारे में बात की तो उसने बताया की कुछ समय पहले पिता की मृत्यु हो गयी तो दशगात्र के बाद से वह शांत रहने लगा। खेती करने का काम चालू किया तो पुराना बोर में पानी नहीं आया तो फसल मरने लगी। नया बोर खुदवाए तो उसमें पानी नहीं निकला इससे उन्हें बहुत नुकसान हुआ। फसल को बचाने के लिए गांव में उनके खेत के पास जो सामूहिक बोर था उसने बिना किसी को बताये उससे अपने खेत की सिंचाई कर ली तो गांव वालों से उसके ऊपर दंड लगा दिया। यह सब होने के बाद वह शर्म से बाहर निकलना बंद कर दिया, फिर शराब पीने लगा। उसके घर के आसपास से अगर कोई बात करते हुए जाता था तो उसे लगता था जैसे उसके बारे में बात कर रहे हैं। यह सब सोचकर वह बहुत परेशान रहने लगा था। मितानिन ने मरीज को जिला अस्पताल ले जाने की सलाह दी परन्तु पत्नी ने बताया की घर वाले झाडफूंक करवा रहे हैं। मितानिन ने संगठन बैठक में मरीज की पत्नी को बुलावाय और उसने रो कर अपने पति की स्थिति की जानकरी सभी को दी। बैठक के बाद सब मरीज के घर गए और उसके बड़े भाई जो उन्हें देखने आए थे उन्हें समझाए की मरीज का झाड़फूंक नहीं करवाकर जिला अस्पताल में इलाज करवाएं। बहुत समझाने पर घर वाले अस्पताल ले जाने के लिए माने। एस.पी.एस. ने जिला अस्पताल के काउंसलर से फोन में बात की तो उन्होंने बताया कि वे शुक्रवार और शनिवार को ही बैठते हैं और मरीज को भेज दो। मितानिन मरीज को लेकर जिला अस्पताल गयी जहां डॉक्टर ने जांच कर मरीज को दवा दी। 8–10 दिन दवा खाने से ही मरीज में सुधार दिखने लगा। मरीज ने 3 माह तक दवा खाई और वह बिलकुल ठीक हो गया। आज वह खेत में काम कर रहा है और घर में भी काम में मदद करता है।

उमा गजेन्द्र–मितानिन

22. मितानिन ने मानसिक स्वास्थ्य से पीड़ित विकलांग बालिका की इलाज में मदद की (ग्राम–नारायणपुर, विकासखंड–लैलूंगा, जिला–रायगढ़)

गांव में के 21 वर्षीय लड़की रहती है जो कि पैरों से विकलांग है। तीन माह पहले उसकी छोटी बहन की सगाई तय हुयी थी तब से वह बड़बड़ाने लगी थी। घर वालों को रात में सोने नहीं देती थी। घर वाले किसी को भी बताए बिना लड़की का झाड़फूक करवाने लगे थे परन्तु लड़की की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। एक दिन पारा की मितानिन जब परिवार भ्रमण के लिए निकली तो लड़की के घर वालों ने मितानिन को बुलाकर अपनी लड़की की स्थिति के बारे में पूरी जानकरी दी। मितानिन ने परिवार वालों को समझाया की यह भी एक बीमारी है और इसका भी इलाज होता है। मितानिन लड़की को अस्पताल में दिखाई और इलाज चालू करवाई। अभी लड़की की दवा चल रही है और स्थिति में भी पहले से सुधार हुआ है।

23. मानसिक रोग झाड़फुक से नहीं इलाज करवाने से ठीक होता है

ग्राम–केंवराडीही, विकासखंड–पथरिया, जिला–मुंगेली

गांव का 21 वर्षीय युवक एकदम स्वस्थ था और अपना सभी काम अच्छे से कर लेता था। कुछ दिनों से उसमें बदलाव आने लगा तो उसने अपने घर वालों को बताया कि उसे कुछ आवाजें सुनाई पड़ती है। घर वालों ने सोचा कि उसे बाहरी हवा लग गयी है और उसे झाड़फूंक करवाने वाले के पास ले गए। झाड़फूंक करने वाले ने भूत को भगाने के नाम पर उस युवक को मार–मार कर घायल कर दिया। गांव की मितानिन रेणुका को जब पता चला तो वह उस युवक के घर गयी और उसके घर वालों को समझाया की आपके बेटे को भूत नहीं मानसिक रोग हो गया है जिसका इलाज झाड़फूंक नहीं दवा गोली है। मितानिन ने 108 को फोन कर बुलवाया और युवक को घर वालों के साथ जिला अस्पताल भेजा। अस्पताल में युवक की चोट की मरहम पट्टी की गयी और उसके मानसिक रोग का इलाज शुरू किया गया। अब वह युवक ठीक है अपनी दवा समय पर खा रहा है और सामान्य दीवान जी रहा है।

रेणुका मसीह–मितानिन

24. मानसिक रोगी मां का इलाज करवाकर मितानिन ने नवजात को मां का सुख दिलाया (ग्राम–छेरकापुर, विकासखंड–पलारी, जिला–बलौदाबाजार)

गांव की एक 5 माह की गर्भवती को बी.पी. की समस्या हो गयी थी। गर्भवती महिला का पहला गर्भ 5 माह में खराब हो गया था इस कारण वह बहुत डरी हुयी रहती थी। गांव की मितानिन ने गर्भवती को छेरकापुर के हेल्थ एण्ड वेलनेस सेंटर में इलाज के लिए भेजा था। हेल्थ एण्ड वेलनेस सेंटर से दवा लेने के बाद भी गर्भवती का बी.पी. सामान्य नहीं रहता था। अप्रैल माह में गर्भवती को एक दिन अचानक से दर्द हुआ तो उसे उप–स्वास्थ्य केंद्र लेकर गए जहां नर्स ने सोनोग्राफी और बाकी रिपोर्ट देखने के बाद गर्भवती को जिला अस्पताल ले जाने के लिए बोला। गर्भवती अस्पताल नहीं जाना चाह रही थी परन्तु घर वालों के समझाने के बाद वह मान गयी। दूसरे दिन गर्भवती को लच्छनपुर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर गए जहां बी.पी. जांच करने पर गर्भवती का बी.पी. बहुत बढ़ा हुआ आया तो उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया परन्तु संध्या जिद करके घर वापस आ गयी और घर में ही प्रसव करवाने की जिद करने लगी। गर्भवती की स्थिति को देखते हुए घर वालों ने उसे नीई अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया और दूसरे दिन एक निजी अस्पताल लेकर चले गए। रात को 11:30 बजे ऑपरेशन कर गर्भवती महिला का प्रसव किया गया जिसमें लड़के का जन्म हुआ। सुबह जब महिला को होश आया तो वह मानने के लिए तैयार नहीं हुई कि उसका प्रसव हो गया है वह अपने आप को अभी भी गर्भवती ही समझ रही थी। वह बच्चे को दूध पिलाना तो छोड़ उसे हाथ भी नहीं लगा रही थी। घर वाले बहुत परेशान हो गए थे। 4 दिन बाद महिला की अस्पताल से छुट्टी कर दी गयी। घर में आकर भी वह बच्चे को अपना बच्चा नहीं मान रही थी। घर वाले झाड़फूंक करवाने लगे। मितानिन को जब पता चला वह उनके घर गयी घर वालों को समझाया की महिला को मानसिक रोग हो गया है जिसका इलाज जिला

अस्पताल में होता है झाड़फूंक से नहीं। मितानिन के समझाने पर महिला के घर वाले मान गए और उसे जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल के डॉक्टर प्रेमी ने महिला की जांच की और उसकी मानसिक रोग की दवा चालू कर दी। कुछ ही दिनों में महिला ठीक होने लगी और उसने अपने बच्चे को दूध पिलाना कर दिया। अब मां और बच्चा दोनों स्वस्थ है।

रेशमी साहू–मितानिन प्रशिक्षक

25. मानसिक रोग का इलाज झाड़फूंक नहीं है

ग्राम–मोदे (टिकरापारा), विकासखंड–कांकेर, जिला–कांकेर

मितानिन का 25 वां चरण प्रशिक्षण के बाद गांव की मितानिन अमरोतिन ने गांव में पारा समिति की बैठक रखी। बैठक स्थान के सामने एक 23 वर्षीय युवक रहता है जो बार–बार अपना सिर जमीन में पटकता था और अपने घर से कपड़े उतारकर बैठक स्थल तक बार–बार दौड़ लगता था। बैठक के बाद मितानिन उस परिवार से मिलने गयी और लड़के के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया की पिछले एक साल से लड़के की यही स्थिति है, उस पर देवता का प्रकोप है और झाड़फूंक करवा रहे हैं परन्तु ठीक नहीं हो रहा है। मितानिन ने समझाया की आपके बेटे को मानसिक रोग हो गया है जो झाड़फूंक से ठीक नहीं होगा इसे इलाज के लिए जिला अस्पताल ले जाना होगा। मितानिन ने परिवार से लड़के को अस्पताल ले जाने में मदद करने की बात भी बोली परन्तु वे लोग नहीं माने। मितानिन हर दो दिन में उनके घर जाती थी और उन्हें समझाती थी कि आपका बेटा इलाज से ठीक हो सकता है। मितानिन के 15 दिन के समझाने के बाद लड़के की मां ने बताया कि हमारे पास किराये का पैसा नहीं है तो मितानिन ने बोला मैं पैसा दूंगी आप कल ही बेटे को अस्पताल लेकर चलो। दूसरे दिन 4 लोग लड़के को लेकर जिला अस्पताल गए तो डॉक्टर ने जांच कर बोला कि लड़के को रायपुर भेजना पड़ेगा। उसी समय रायपुर से एक डॉक्टर जिला अस्पताल आया हुआ था, मितानिन ने उनसे मरीज के बारे में पूरी बात की तो डॉक्टर मरीज को अपने साथ रायपुर मेकाहारा लेकर चले गए। मेकाहारा में लड़के की जांच हुयी और उसे भर्ती कर लिया गया। तीन दिन भर्ती रखने के बाद एक माह की दवा देकर चौथे दिन छुट्टी कर दिए। दवा खाने के 7 दिन बाद से मरीज को ठीक लगने लगा वह अपने से खाना खाना, नहाना और लोगों से बातचीत करने लगा। 20 दिन की दवा खाने के बाद लड़के ने घर से बाहर निकल कर कमाना चालू कर दिया। लड़के की अभी एक साल की दवा चल रही है और वह बिल्कुल ठीक हो गया है। लड़के के परिवार वाले मितानिन को बहुत धन्यवाद देते हैं। **अमरोतिन साहू–मितानिन**

26. मितानिन ने मानसिक रोगी बालक का इलाज करवा उसे वापस स्कूल भेजा

ग्राम–वारादावान, विकासखंड–बरमकेला, जिला–रायगढ़

गांव में एक 10 वर्षीय बालक है जो परिवार या दोस्तों के द्वारा कुछ भी कहने पर उनके साथ मारपीट करने लग जाता था या फिर उदास बैठा रहता था। बालक के घर वालों ने झाड़फूंक भी करवाया परन्तु बालक की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। पारा की मितानिन

रामवती सिदार को जब बालक की तबियत के बारे में पता चला तो वह उसके घर गयी और बालक की मां को समझाया की तुम्हारे बेटे का झाड़फूंक से तबियत में कोई सुधार नहीं हो रहा है इसे जिला अस्पताल लेकर चलो। मितानिन के द्वारा बालक की मां को बार–बार जिला अस्पताल में इलाज के लिए चलने के लिए समझाया गया तो वह मान गयी और एक दिन मितानिन के साथ अपने बच्चे को लेकर रायगढ़ जिला अस्पताल गयी। जिला अस्पताल में बच्चे की जांच के बाद मानसिक रोग का इलाज चालू किया गया। अब वह बालक बिल्कुल ठीक हो गया है, वह स्कूल में किसी के साथ मारपीट नहीं करता है, सबसे अच्छे से बातचीत करता है और नियमित दवा भी खा रहा है।

रामबाई सिदार–मितानिन

27. ग्राम–जामरी, विकासखंड–डोंगरगढ़, जिला–राजनांदगांव

गांव के एक परिवार की बहु को उसकी सास और परित्यक्ता ननंद बहुत तंग करते थे। वे उसे खाना नहीं देते थे, दिनभर काम कराते रहते थे, गाली देते थे और उसके बच्चों को भी उससे दूर रखते थे। वह बच्चों से बात करने जाती थी तो भी उसे बात करने नहीं देते थे। पति भी उसकी कोई नहीं सुनता था उल्टा उसे ही डांट देता था। यह सब सहते–सहते महिला धीरे–धीरे शारीरिक रूप से कमजोर होने के साथ ही साथ मानसिक रूप से भी बीमार होने लगी थी। पत्नी की स्थिति को देख पति उसे मायके छोड़कर आ गया। मायके में कुछ दिन रहने के बाद महिला की तबियत ठीक हो गयी तो मायके वाले उसे वापस ससुराल छोड़ कर आ गए। ससुराल आने के बाद फिर से उसकी ननंद ने उसे प्रताड़ित करना चालू कर दिया। इस बार महिला गंभीर रूप से बीमार हो गयी। महिला अब गाली देती थी, बड़बड़ाती थी और किसी को भी मारने की कोशिश करती थी। कपड़ों का होश नहीं रहता था, शुई कपड़ों में करके हाथ में लगा कर घुमती रहती थी। पति ने फिर से उसे मायके में छोड़ कर चला गया और 8 वर्ष तक उसे देखने तक नहीं आया। महिला के घर वाले झाड़फूंक करवा कर थक गए और उसे उसी के हालत में रहने दिए। महिला की मां अपनी बेटी के कहने और बाहर न जाए इसका ध्यान रखती थी। इसी दौरान मितानिनों का मानसिक रोग पर प्रशिक्षण हुआ और एच.बी.वाय.सी. सर्वे करने के लिए मितानिन उस परिवार से मिलने के लिए गयी। मितानिन को महिला की मां ने बताया कि इसे 6 माह बाद आज नहलाई हूं और बाल में लट आ गए हैं और जुएं हो गयी है उसे निकाल रही हूं। मितानिन ने उन्हें समझाया की झाड़फूंक से उनकी बेटी ठीक नहीं होगी उसे अस्पताल ले जाने की जरुरत है। घर वाले नहीं माने और झाड़फूंक पर ही विश्वास कर रहे थे। मितानिन ने अपनी एम.टी. को इस परिवार से बात करने के लिए विशेष रूप से बुलवाया। एम.टी. और मितानिन बहुत बार उनके घर गए कई बार तो महिला उन पर कीचड़ फेंका, पत्थर मारा। इतना सब कुछ होने के बाद भी मितानिन और एम.टी. ने महिला के परिवार को समझाना नहीं छोड़ा। इतने प्रयास के बाद अक्टूबर माह में महिला के घर वाले अस्पताल ले जाने के लिए मान गए। ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के द्वारा गाड़ी की व्यवस्था की गयी। गाड़ी में बिठाने में महिला को 2 घंटे लगे और महिला को बांधकर बिठाया गया। मेडिकल कालेज राजनांदगांव पहुंचने के बाद महिला को

स्ट्रेचर में बंधकर डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने महिला को जांचकर महिला को भर्ती करना पड़ेगा बोला परन्तु घर वाले नहीं माने। डॉक्टर ने दवा देकर भेज दिया। महिला की मां ने एक माह अपनी बेटी को नियमित दवा खिलाई मितानिन और एम.टी. भी निगरानी करती रही। कुछ दिन के बाद महिला आंख खोलकर देखी और मुस्कुराई। एक माह बाद महिला समिति की बैठक में अपनी मां के साथ आई अच्छे से साड़ी पहनकर आई और सबसे अच्छे से बात भी की। महिला ने समिति के सदस्यों को बताया कि उसकी इस हालत की जिम्मेदार उसकी ननंद और सास है जिनके प्रताड़ित करने के कारण वह बीमार हो गयी थी। उसके बच्चे अब मां से मिलना चाहते हैं ससुर भी हालचाल पूछते हैं। महिला अब वापस ससुराल जाने की तैयारी कर रही है।

कुलेश्वरी, दुलारी–मितानिन, हेमलता वर्मा–एम.टी.

28. मन का दुःख बना मानसिक रोग का कारण (वार्ड क्रमांक 24, बिरगांव)

पारा में एक 24 वर्षीय लड़की अपनी मां के साथ रहती है। लड़की के पिता की मृत्यु के बाद से वही पूरा घर संभालती है। लड़की की मां एक मानसिक रोगी है। लड़की को मोबाईल में बात करते हुए एक लड़के से प्रेम हो गया और दोनों शादी करने का मन बना लिए थे। शादी के बारे में जब घर में चला तो घर वाले मना कर दिए और उनकी शादी नहीं हो पायी। लड़की बहुत उदास और दुखी हो गयी। इस घटना के बाद से लड़की असामन्य हरकते करने लग गयी जैसे की सभी के पैर छूना बहुत ज्यादा बात करना आदि। पारा की मितानिन को जब लड़की के बारे में पता चला तो वह उसे अपने साथ जिला अस्पताल लेकर गयी। अस्पताल में जांच में लड़की में खून की कमी और मानसिक रोग का पता चला। अस्पताल में लड़की को 15 दिन की दवा दी गयी। 15 दिन तक लड़की ने नियम से दवा खायी और मितानिन भी बीच–बीच में उससे जाकर मिलती रही। 15 दिन के बाद मितानिन जब लड़की को फिर अस्पताल लेकर गयी तो डॉक्टर ने जांच कर बताया की लड़की अब बिलकुल ठीक हो गयी है।

संगीता वर्मा–मितानिन

29. मानसिक रोगी के लिए परिवार का सहयोग जरुरी है

वार्ड क्र. 5 इंदिरा नगर, रायगढ़

पारा में महिला आरोग्य समिति की बैठक में मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा चल रही थी। चर्चा में समिति की महिलाओ ने एक मानसिक रोगी युवक के बारे में बताया। समिति की महिलाओं ने बताया कि युवक के साथ स्वयं उसकी मां और बहन के दवारा बुरा व्यवहार किया जाता है उसे प्रताड़ित करते हैं तो वह गुस्से में आकर सबको मारता, गाली देता और खुद को चोट पहुंचाता है। समिति के दवारा युवक की मां को बैठक में बुलवाया गया और उसके बेटे के मानसिक रोग का करण पूछा गया। युवक की मां ने बताया की उसका बेटा किसी लड़की को पसंद करता था परन्तु उसकी शादी कही और हो गयी। उस दिन के बाद से वह गुमसुम रहता था और अपने आप से बड़बड़ाते रहता था। युवक की मौसी ने युवक के बारे में बैठक के बाद समिति के सदस्यों को बताया की युवक को घर वालों की बात अच्छी नहीं लगती है उसकी मां हर वक्त उसे तू पागल है

तुझसे कौन शादी करेगा बोलती रहती है और इस बात से उसे गुस्सा आता था जिससे धीरे–धीरे उसका पागलपन बढ़ गया। समिति के सदस्यों ने युवक की मां को फिर से बैठक में बुलाया और उन्हें समझाया की अपने बेटे के साथ ऐसा व्यवहार न करे जिससे उसे बुरा लगे। समिति के सदस्यों के द्वारा युवक की मां को अपने बेटे का इलाज जिला अस्पताल में करवाने की सलाह दी गयी। युवक की मां बेटे के इलाज के लिए मान गयी और युवक को जिला अस्पताल ले जाया गया। युवक की जांच के बाद दवा चालू कर दी गयी। एक माह बाद जब युवक की तबियत के बारे में समिति के द्वारा घर वालों से पूछा गया तो पता चला की युवक दवा ले रहा है और पहले से व्यवहार में बदलाव आया है। **मितानिन–किरण चौहान**

30. मितानिन ने 7 साल के गंभीर मानसिक रोगी बच्चे का इलाज करवाया

कैलाश नगर धमधा नाका, वार्ड 32, दुर्ग

पारा में एक 7 वर्षीय बच्चा है जो की मानसिक रोगी है। इस बच्चे के मां बाप भी इलाज की उम्मीद छोड़ चुके थे। पारा की मितानिन ने बच्चे की मां को मानसिक रोग का अस्पताल में इलाज के बारे में समझाया। बच्चे की मां बच्चे की शैतानियों से बहुत परेशान थी। मितानिन और उसकी मां मिलकर बच्चे को संभालते थे। बच्चे को ऑटो में लेजाने से वह किसी को भी पकड कर खींच देता था किसी पर भी थूक देता था। अस्पताल लाने–लेजाने में मितानिन और बच्चे की मां परेशान हो जाते थे परन्तु मितानिन बच्चे की किसी भी बात का बुरा नहीं मानती थी और उसे इलाज में पूरी मदद करती थी। 12 अगस्त 2021 को बच्चे का इलाज पूरा हुआ और अब बच्चे के स्वास्थ्य में पहले से बहुत सुधर आया है। **मंजू मेश्राम–मितानिन**

31. नींद नहीं आना भी मानसिक रोग का एक लक्षण है

गुरुनानक वार्ड क्र. 22, भाटापारा

पारा में एक व्यक्ति था जो 22 दिन और 22 रात से नहीं सोया था। मितानिन को परिवार भ्रमण के दौरान उस व्यक्ति की पत्नी ने अपने पति के बारे में पूरी जानकरी दी। मितानिन को लक्षण से वह व्यक्ति समान्य मानसिक रोगी लगा। मितानिन ने उस व्यक्ति से और उसकी पत्नी से बातचीत कर उन्हें जिला अस्पताल में जांच के लिए चलने के लिए कहा तो वे मान गए। यह परिवार बहुत गरीब होने की वजह से बलौदा बाजार जिला अस्पताल इलाज के लिए जाने के लिए मितानिन ने महिला आरोग्य समिति से 500 की राशि का सहयोग दिलाया। मितानिन उस व्यक्ति को उसकी पत्नी के साथ बलौदाबाजार जिला अस्पताल लेकर गयी। वहां जांच के बाद उन्हें दवा दी गयी। नियम से दवा खाने के बाद वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया। **उषा कुर्रे–मितानिन**

32. नशा मानसिक रोग का एक करण हो सकता है (अंबिकापुर)

अम्बिकापुर की एक मितानिन अपने पति के शराब की आदत से बहुत परेशान रहती थी। कुछ दिन के बाद उसके पति ने शराब पीना बंद कर दिया और उसे कुछ आवाजे सुनाई देती थी। वह अपनी पत्नी को भी उन आवाजों को सुनने बुलाता था और बोलता था की उसे कुछ लोग मारने

आ रहे हैं। इतना ही नहीं कही भी अगर चार लोग बात करते हुए दिखते थे तो उसे यह लगता था की वे सब उसके बारे में ही बात कर रहे हैं और उसकी बुराई कर रहे हैं। इसी दौरान मितानिन को मानसिक रोग पर प्रशिक्षण मिला। प्रशिक्षण के बाद मितानिन को अपने पति में मानसिक रोग के लक्षण समझ में आने लगे। मितानिन ने अपनी एम.टी. को अपने पति के लक्षणों के बारे में बताया। एम.टी. ने मितानिन से अपने पति को जिला अस्पताल ले जाने की सलाह दी। मितानिन अपने पति को जिला अस्पताल लेकर गयी और जांच करवाई। जिला अस्पताल में डाक्टर ने जांच के बाद मितानिन के पति को दवा दी। समय पर दवा खाने के बाद आज मितानिन का पति एकदम स्वस्थ है।

गीता किसपोट्टा–मितानिन

मितानिन द्वारा अंधविश्वास के शिकार मानसिक रोगी का इलाज करवाया गया

1. ग्राम–तोड़गांव, विकासखंड–आरंग, जिला–रायपुर

गांव में एक महिला है जो 1992 से मानसिक रोग से पीड़ित है और उसकी दवाईयां चल रही है। पारा की मितानिन ने मानसिक रोग के प्रशिक्षण के बाद उस महिला के घर गयी और परिवार के लोगों से मरीज के बारे जानकरी ली। मरीज की मां ने बताया की उनकी बेटी आठवीं कक्षा तक पढ़ी है और उसको एक बार बुखार आया था और उसके बाद से उसकी दिमागी हालत बिगड़ गयी है। मरीज कभी–कभी रोती है। मरीज एक बार मानसिक अस्पताल माना में भर्ती भी हुयी थी और उसे 2 बार करेंट भी लगाया गया है। मरीज के परिवार वाले हर माह रायपुर जाकर दवा लाते हैं जिसमें फीस 300 रुपये और दवा 1000 रूपये की लगती है और आना–जाना मिलाकर हर माह 15 सौ रूपये खर्च हो जाता है। मितानिन ने उन्हें जिला अस्पताल ले जाकर मुफ्त में दवा दिलवाई।

संतोषी वर्मा–मितानिन

2. मानसिक रोग के पीछे कोई न कोई कारण होता है

ग्राम–तिलई, विकासखंड–राजनांदगांव, जिला–राजनांदगांव

गांव की एक महिला को शादी के 25 साल हो गए थे और उसे बच्चे नहीं हुए थे। महिला चना फैक्ट्री में काम करती थी। लंबे समय तक बच्चे नहीं होने की चिंता के कारण महिला के व्यवहार में धीरे–धीरे बदलाव आने लग गया। महिला घर के बर्तनों को बार–बार बाहर निकालकर धोती रहती थी। नये कपड़े जला देती थी, हसना व अपने आप से बात करने लगी थी। घर वाले महिला को देवादा लेकर गए वहां उनका 15 हजार रुपये खर्च हो गया परन्तु महिला के स्वास्थ्य में सुधार नहीं आया। मितानिन महिला के घर गयी और समिति की बैठक में भी महिला के घर वालों को बुलाकर जिला अस्पताल में इलाज करवाने के लिए समझाई। महिला को घर वाले जिला अस्पताल लेकर गए और इलाज चालू करवाए। महिला को एक माह का दवा दिया गया महिला ने नियमित दवा खायी और उसके स्वास्थ्य में बहुत सुधार आया अभी महिला ठीक है, नियमित दवा खा रही है और वापस काम पर जाने लगी है।

प्रेमलता साहू–मितानिन प्रशिक्षक

3. मानसिक रोग की वजह से खुद को नुकसान भी पहुंचा सकते हैं रोगी

ग्राम–फुलझर, विकासखंड–घुमका, जिला–राजनांदगांव

गांव में एक 34 वर्षीय पुरुष मानसिक रोगी था। यह पुरुष दिन भर इधर–उधर घूमता रहता था। कोई भी कार्य नहीं करता था। पुरुष के घर वाले परेशान हो गए थे। एक दिन उस पुरुष ने ब्लेड से अपने शरीर को बहुत जगह से काट लिया और लहुलुहान हो गया। लहुलुहान होने की वजह से उसे अस्पताल चलने के लिए कहा गया तो वह मान गया। मितानिन और

परिवार वाले उसे जिला अस्पताल लेकर गए जहां उसके घाव के इलाज के साथ ही साथ मानसिक रोग के डॉक्टर को भी उसे दिखाया गया औए दवा शुरू की गयी। दवा खाने के कुछ ही दिन में पुरुष की तबियत में सुधार होने लगा और वह घूमना फिरना बंद कर दिया और अपना काम ठीक से करना चालू कर दिया। **मुकेश्वरी–मितानिन प्रशिक्षक**

4. ग्राम–ओझागहन, विकासखंड–गुरुर, जिला–बालोद

गांव की एक 54 वर्षीय महिला की 27 वर्ष पहले शादी हुयी थी और शादी के बाद उसके पति ने दूसरी पत्नी रख ली थी उसके बाद से यह महिला अपने मायके आ गयी और उसकी मानसिक स्थिति खराब हो गयी थी। यह महिला रोज 11 बजे अपने घर से डेढ़ किलोमीटर दूर नदी जाती थी और 11 से 1 बजे तक नदी में डूबी रहती थी और फिर 1 बजे अपने घर के लिए 10–10 कदम नापते हुए अपने घर जाती थी। अपने घर जाने में उसे 2 से 3 घंटा लग जाता था। महिला को ऐसा करते हुए 27 वर्ष हो चूका था। गांव की मितानिनों ने मानसिक रोग पर प्रशिक्षण लेने के बाद महिला के परिवार वालों से मिलकर उन्हें समझाया की महिला को जिला अस्पताल लेकर जाओ वह इलाज से महिला पहले जैसे ठीक हो सकती है। परिवार वालों ने यह कहकर पहले तो मना कर दिया की हमने बहुत इलाज करवा लिया है वह ठीक नहीं हो सकती। मितानिनों ने बहुत समझाया और समिति की बैठक में भी महिला के इलाज पर चर्चा की गयी। समिति की बैठक के बाद एस.पी.एस. किरण ने महिला के भाई को अमरीकला शासकीय अस्पताल ले जाने के लिए समझाए और डॉक्टर का मोबाईल नम्बर भी दिए तब महिला का भाई तैयार हुआ। महिला को अस्पताल ले जाया गया और डॉक्टर ने महिला की जांच कर दवा चालू की। दवा खाने के बाद से महिला को बहुत नींद आने लगी और वह खाना भी अच्छे से खाने लगी और घर के काम में भी मदद करना चालू कर दी। कुछ समय बाद कोरोना के कारण घर वाले दोबारा महिला को अस्पताल नहीं ले गए। मितानिन और एम.टी. को जब पता चला तो वे उनके घर गए और समझाए कि महिला को नियमित दवा खिलाते रहेंगे तो वह पूरी तरह ठीक हो सकती है। मितानिन और एम.टी. के समझाने पर महिला का भाई उसे फिर से अस्पताल लेकर गया। महिला अब ठीक है खेत भी काम करने जाती है। **पूर्णिमा साहू–एम.टी.**

5. धरसींवा, जिला–रायपुर

ग्राम पंचायत देवरी में एक 25 वर्षीय लड़की रहती है। यह लड़की रात–दिन घुमती रहती थी, कपड़ा भी ठीक से नहीं पहनती थी और पत्थर या खपरा से किसी को भी फोन लगाती रहती थी। पारा बैठक में मानसिक रोग पर चर्चा के दौरान उस लड़की के इलाज पर चर्चा की गयी। बैठक के बाद पारा की मितानिन और एम.टी. लड़की को समझाकर जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल में मैडम ने लड़की से बातचीत की तो उसने बताया कि उसे शादी करने का मन है। लड़की ने डॉक्टर से अच्छे से बातचीत की। डॉक्टर ने सब जानने के बाद लड़की को दवा दी। लड़की अब रोज दवा खा रही है और खुश है। **अनीता वर्मा–मितानिन**

6. ग्राम पंचायत–छपोरा, विकासखंड–धरसींवा, जिला–रायपुर

गांव में 9 माह की एक शिशुवती महिला हमेशा गुमसुम रहती थी। महिला किसी से बातचीत नहीं करती थी, अपने बच्चे को दूध नहीं पिलाती थी उसकी देखभाल नहीं करती थी। परिवार भ्रमण के दौरान मितानिन और एम.टी. को महिला में मानसिक रोग के लक्षण दिखाई दिए। गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में महिला के परिवार वालों से महिला को अस्पताल ले जाने के लिए बातचीत की गयी। महिला के घर वाले बहुत गरीब है इस वजह से अस्पतल नहीं जाना चाहते थे तो समिति ने अस्पताल जाने में मदद की व्यवस्था कर दी। दूसरे ने मितानिन महिला को अस्पताल ले जाने के लिए महिला के घर गयी तो महिला की सास ने यह कहकर मना कर दिया कि मितानिन लोग मरीज को अस्पताल लेकर जाते हैं और उनकी कोरोना की जांच करवाते हैं और फिर उन्हें भर्ती करवा देते हैं। महिला की सास की बात सुनकर मितानिन वापस लौट गयी। दूसरे दिन एम.टी. और मितानिन फिर से महिला के घर गए और महिला के घर वालों को समझाए। घर वाले मान गए तो महिला को अस्पताल लेकर गए। अस्पताल में महिला की जांच के बाद दवा चालू की गयी। एक माह की दवा खाने के बाद महिला में बहुत सुधार हो गया। महिला अब अपने बच्चे की पूरी देखभाल करती है, घर का काम व खाना पकाने का काम करती है और सभी से अच्छे से व्यवहार करती है। डॉक्टर ने महिला को लंबे समय तक दवा खाने की सलाह दी है।

अन्नुपुमा लहरी–मितानिन

7. ग्राम–धरसींवा वार्ड क्रमांक–1, विकासखंड–धरसींवा, जिला–रायपुर

पारा की मितानिन रुखमनी ने अपने क्षेत्र में 1 गंभीर और 3 सामान्य मानिसक रोगी की पहचान की गयी। मितानिन को चारों मरीजों को अस्पताल ले जाने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा। गंभीर मरीज अस्पताल नहीं जाना चाहती थी बार–बार गाड़ी से कूद जाती थी। मरीज के घर वालों के बहुत समझाने पर वह गाड़ी में बैठा और उसने गाड़ी में शौच कर दिया। यह देखकर बाकी तीन मरीज गाड़ी में चढ़ने से मना कर रहे थे परन्तु मितानिन के बहुत समझाने पर वे तैयार हुए। चारों को सी.एच.सी. में डॉक्टर को दिखाया गया और दवा चालू की गयी। दवा चालू होने के एक माह बाद चारों मरीजों में 25 प्रतिशत सुधार हो गया है। मितानिन और एम.टी. उनके बारे में नियमित जानकरी लेते रहते हैं।

सुक्ताना वहीदा–एम.टी.

8. ग्राम–मलौद, विकासखंड–धरसींवा, जिला–रायपुर

गांव का एक 35 वर्षीय पुरुष शराब, गांजा, तंबाखू सभी का नशा करता था। नशा के करण उसकी स्थिति दिन–ब–दिन बिगड़ती जा रही थी उसने खाना, खाना भी बंद कर दिया था। एक दिन मितानिन और एम.टी. उसके घर गए तो देखा कि पुरुष एक जगह खड़ा होकर एकटक देख रहा है। मितानिन और एम.टी. ने उससे बात की तो उसने कहा कि ऊपर कोई दिखाई दे रहा है क्या ? वह मुझसे बहुत व्यव्हार कर रहा है। एम.टी. और मितानिन ने उस पुरुष के घर वालों को अस्पताल जाने के लिए समझाया तो वे लोग तैयार हो गए। दूसरे दिन मितानिन और एम.टी. ने

गाड़ी किराये से की और उसे जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल के डॉक्टर ने पुरुष की अच्छे से काउंसिलिंग की और उसे दवा देकर समझाया की दवा खाने के बाद नशा नहीं करना नहीं तो तुम्हारे साथ कोई भी घटना घट सकती है। पुरुष ने उस दिन से दवा खाना शुरू की और नशा करना छोड़ दिया। आज वह पुरुष ठीक है।

चंपा लहरी–मितानिन, लता देवांगन–मितानिन प्रशिक्षक

9. ग्राम पंचायत–सिगीबहार, विकासखंड–फरसाबहार, जिला–जशपुर

गांव की एक महिला 7 माह से डरी–डरी और गुमसुम रहती थी, घर के लोगों से बात भी नहीं करती थी, लोगों को देखकर डरती थी, अचानक घर से निकल जाती थी। घर के लोग हमेशा उस पर नजर रखते थे परन्तु वह फिर भी भाग जाती थी। एक बार तो डर से कुएं में गिर गयी थी। घर के लोग परेशान हो गए थे। ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में मितानिन ने मानसिक रोगी के इलाज के बारे में बात की और उन्हें पी.एच.सी. केरसाई ले जाने की जानकरी दी। बैठक के बाद मितानिन उस महिला के घर गयी और महिला को अस्पताल लेकर चलने के लिए कहा। महिला के घर वाले मान गए और मितानिन के साथ महिला को अस्पताल लेकर गए। अस्पताल में डॉक्टर ने महिला की जांच की और सी.एच.सी. फरसाबहार किया। मितानिन महिला को लेकर सी.एच.सी. के डॉक्टर को दिखाई और डॉक्टर ने महिला की दवा चालू की। परिवार वाले महिला को समय पर दवा खिलाते रहे और मितानिन भी बीच–बीच में घर जाकर देखते रहती थी। एक माह में ही महिला की स्थिति में बहुत सुधार आ गया। महिला अपने परिवार के साथ अब ठीक से रहती है अब उसे डर नहीं लगता है सबसे अच्छे से बात करती है और घर का काम भी करने लगी है।

बेरोनिक–एम.टी.

10. ग्राम पंचायत–कुंटा, विकासखंड–धरसींवा, जिला–रायपुर

गांव की एक लड़की का विवाह 15 दिन पहले हुआ था। उसके बाद से वह लड़की जो बोलती थी उसे बाद में कुछ याद नहीं रहता था। खाना देर से बनाती थी, झूठ बोलने लग गयी थी, रात में सोती नहीं थी कभी–कभी बेहोश हो जाती थी और घर वालों को बोलती थी मैं तुम लोगों को बर्बाद करने आई हूं। गांव की मितानिन और एम.टी. जब उस लड़की के घर परिवार भ्रमण के लिए गए और उससे बातचीत किये तो पता चला की लड़की बहुत समय से मानसिक रोग से पीड़ित है। लड़की के सास ससुर ने बोला की शादी के पहले हमको नहीं पता था। दूसरे दिन ही एम.टी. और मितानिन लड़की को जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल में डॉक्टर के द्वारा लड़की की काउंसलिंग की गयी और दवा दी गयी। एक सप्ताह बाद मितानिन जब उस लड़की के घर परिवार भ्रमण के लिए गयी तो लड़की ने मितानिन से सामान्य तरीके से बातचीत की। लड़की के घर वालों ने बताया की वह दवा समय पर ले रही है और पहले से बहुत ठीक है।

दुर्गा साहू–मितानिन

11. ग्राम–पिधमपुर, विकासखंड–लोरमी, जिला–मुंगेली

गांव में एक परिवार रहता है जिसमें पति–पत्नी और तीन बच्चे रहते थे। एक दिन अचानक से पति–पत्नी के बीच लड़ाई हुयी और पत्नी घर छोड़ कर चली गयी। पत्नी के घर छोड़ के जाने के बाद से पति का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ने लग गया। गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में मानसिक रोग पर चर्चा की गयी तो उस पुरुष की स्थिति के बारे में भी जानाकरी दी गयी। बैठक के बाद एम.टी. और मितानिन उस पुरुष के घर गए और उससे बातचीत किये और उसके घर वालों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाने के लिए समझाए। पुरुष के घर वाले मितानिन और एम.टी. के समझाने पुरुष को जिला अस्पताल ले गए। अस्पताल में संजय की जांच के बाद दवा चालू की गयी। डॉक्टर ने नियमित दवा खाने की सलाह दी है और इलाज लंबे समय तक चलने की जानकरी भी दी। पुरुष के माता–पिता परेशान है परन्तु अपने बेटे को समय पर दवा देते हैं और उसका ध्यान रख रहे हैं। मरीज में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है।

जवाहर लाल जायसवाल–एस.पी.एस.

12. गरम–छतौना, विकासखंड–आरंग, जिला–रायपुर

गांव में एक 20 वर्षीय लड़का है जो सिगरेट, दारू, गांजा हर तरह का नशा करता था। नशे की हालत में वह गाली–गलौच करना सामान फेंकना, मारपीट करता था। धीरे–धीरे उसकी यह हरकतें बढ़ने लगी थी। इसी दौरान गांव में पारा बैठक में मानसिक स्वास्थ्य पर मितानिन से चर्चा की और दीवाल लेखन भी पारा में किया गया। दीवाल लेखन पढ़कर लड़के की मां मितानिन से मिली और बतायी की मेरे बेटे में भी दीवाल लेखन जो लिखा है वैसे लक्षण हैं क्या इसका इलाज है। मितानिन ने लड़के को पी.एच.सी. मंदिर हसौद ले जाने की सलाह दी। मितानिन उसे स्वयं अस्पताल लेकर गयी और डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने लड़के की काउंसलिंग की और उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जिला अस्पताल में लड़के की जांच के बाद इलाज शुरू हुआ। लड़के के माता–पिता लड़के को नियमित दवा खिला रहे हैं। अब वह लड़का ठीक है और किसी के साथ मारपीट नहीं करता है।

पार्वती धृतलहरे–मितानिन

13. ग्राम–पटोरा

45 वर्षीय महिला को रात को नींद नहीं आती थी तो वह रात में अपने घर का सभी काम करती थी और घुमती रहती थी। मितानिन ने लक्षण के आधार पर घर वालों को मानसिक रोग के इलाज के लिए जिला अस्पताल ले जाने की सलाह दी। जिला अस्पताल में मरीज को ले जाया गया और जांच के बाद मानसिक रोग की दवा चालू की गयी। नियमित दवा लेने से मरीज अभी ठीक है।

14. नींद ना आना और शक करना एक तरह का मानसिक रोग हो सकता है

ग्राम–भिनपुरी, पंचायत–रजकुड़ी, विकासखंड–बेमेतरा, जिला–बेमेतरा

गांव में एक पति–पत्नी रहते हैं। पति अपनी पत्नी पर बहुत शक करता था, मारपीट करता था। उसके घर में दुकान थी जिसमें कोई समान लेने आते थे तो उसकी पत्नी अगर किसी को

समान देती थी तो उस पर भी शक करता था। पति को रात में नींद भी नहीं आती थी। अपनी पत्नी के साथ गाली–गलौच करता था। पत्नी बहुत परेशान हो गयी थी। पत्नी ने अपने पारा की मितानिन से अपनी समस्या बतायी। मितानिन ने पत्नी को उसके पति को मानसिक रोग के डॉक्टर को दिखाने के लिए बोली और पति से भी बात की। पहले तो पति झाड़फूंक करवाना चाहता था परन्तु मितानिन के समझाने पर वह डॉक्टर को दिखाने के लिए तैयार हो गया। मितानिन पुरुष को अपने साथ जिला अस्पताल ले कर गयी और जांच करवाई। पुरुष के लक्षण के आधार पर डॉक्टर ने दवाइयां दी और इलाज चालू किया। दवा खाने के कुछ ही दिन में पति के व्यवहार में सुधार हो रहा है। अब वह अपनी पत्नी पर शक, मारपीट नहीं करता है और रात में सोने भी लगा है।

सरोज बाला वर्मा

15. ग्राम–रायखेड़ा, विकासखंड–बेमेतरा, जिला–बेमेतरा

गांव की मितानिन के बेटी मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गयी थी। मरीज अकेले में बड़बड़ाती थी, अपने साफ–सफाई का ध्यान नहीं रखती थी और गाली भी देती थी। मरीज के दो छोटे–छोटे बच्चे थे जिनका वह ध्यान नहीं रखती थी। वह अपने मायके में रहती थी। मरीज के मां–बाप अपनी बेटी के लिए बहुत परेशान रहते थे। उन्होंने अपनी बेटी का झाड़फूंक करवाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। मां बाप की आर्थिक स्थिति वैसे ही ठीक नहीं थी और झाड़फूंक में बचा हुआ पैसा भी खर्च कर चुके थे। इसी दौरान गांव में मानसिक रोग अभियान किया गया। अभियान में जिला अस्पताल में मानसिक रोगियों का मुफ्त में इलाज होने की जानकरी का पता चला तो मितानिन अपनी बेटी को जिला अस्पताल लेकर गयी और जांच करवाकर इलाज चालू करवाई। ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के द्वारा यात्रा के लिए मरीज को आर्थिक सहायता की गयी। मरीज का इलाज चल रहा है और उसमें सुधार भी दिखने लगा है अब वह अपनी देखभाल करती है। मरीज पहले तंबाखू का बहुत सेवन करती थी परन्तु इलाज चालू होने के बाद से तंबाखू खाना बहुत कम कर दी है।

सरोज बाला वर्मा

16. ग्राम–परसदाजोशी, विकासखंड–फिंगेश्वर, जिला–गरियाबंद

गांव के चौक में मितानिनों का पारा बैठक की गयी जिसमें गांव के महिला पुरुष भी भाग लिए। बैठक में पहले तो महिला हिंसा पर मितानिन द्वारा समझाया जा रहा था उसके बाद मितानिन ने मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा की। उसी समय एक महिला ने बोला की आजकल मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है मै अपने आप बोलती रहती हूं मेरे पति मुझे पागल बोलते हैं और पागल कहकर बुलाते हैं। मेरा इलाज भी नहीं करवा रहे हैं, आप लोग मेरा इलाज करवाने में मदद कीजिए। मितानिन ने एम.टी. से महिला के संबंध में सलाह ली और महिला से पूछा कि आपको क्या करना अच्छा लगता है तो महिला ने बोला कि मुझे आजकल सिर्फ बोलते रहने का मन करता है। एम.टी. और मितानिन को महिला का जवाब सुनकर उसमें मानसिक रोग के लक्षण होने की जानकरी सही लगी। दूसरे दिन मितानिन और एम.टी. महिला के घर गए और उसके पति और सास को समझाए की आपकी बहु को मानसिक रोग है और उसका समय पर इलाज नहीं

करवाया गया तो स्थिति और बिगड़ सकती है। महिला के पति और सास इलाज के लिए मान गए। मितानिन महिला को मेकाहारा लेकर गयी और उसे एक सप्ताह तक भर्ती रखकर इलाज किया गया और दवा दी गयी। अभी महिला ठीक है और उसने अपने आप से बात करना भी बंद कर दिया है। मितानिन ने इलाज के दौरान महिला से जब पूछा की अब कैसा लग रहा है तो उसने बोला की अब ठीक लगता है और ज्यादा बात करने का मन नहीं करता।

17. ग्राम–सालेहभाटा, विकासखंड–बागबाहरा, जिला–महासमुंद

गांव की मितानिन को परिवार भ्रमण के दौरान एक परिवार की 50 वर्षीय महिला को मानसिक रोग होने की जानकरी मिली। महिला हमेशा बड़बड़ाती रहती थी, गाली देती थी, घर की चीजों को तोड़ती रहती थी और दिनभर सोती नहीं थी। मितानिन ने महिला के घर वालों को समझाया की महिला का महासमुंद के जिला अस्पताल में इलाज हो जाएगा। मितानिन और महिला के परिवार वाले महिला को जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल में डॉक्टर ने महिला की स्थिति को देखकर उसका इलाज चालू किया। घर वालों ने महिला को बहुत ध्यान से रखा, उसे समय पर दवा खिलाते रहे। कुछ ही समय में महिला ठीक हो गयी और समिति की बैठक में भाग ली और सबसे बहुत अच्छे से बात की। **कान्ति सिन्हा–एस.पी.एस.**

18. ग्राम–झलमला, विकासखंड–बालोद, जिला–बालोद

गांव में एक 30 वर्षीय युवती मानसिक रोग से पीड़ित है। युवती 22 वर्ष की आयु से मानसिक रोगी है। युवती की शादी हो चुकी थी परन्तु उसकी मानसिक स्थिति के करण उसके ससुराल वाले तलाक करवा दिए और वह अपने माता–पिता के घर में रहने लगी। युवती के माता–पिता अपनी बेटी का इलाज देवादा में करवाना चालू किये परन्तु उसे कुछ आराम नहीं मिला। युवती सुस्त बैठी रहती थी, घर का कोई काम नहीं करती थी। पिता की आर्थिक समस्या होने के कारण दवा भी बंद हो गयी थी। इसी दौरान मितानिनों का मानसिक रोग पर प्रशिक्षण हुआ और गांव की मितानिन और एम.टी. युवती के घर गए और उन्होंने युवती के माता–पिता को जिला अस्पताल में मानसिक रोग के डॉक्टर को दिखाने के लिए समझाया। कुछ दिन के बाद युवती के माता–पिता युवती को जिला अस्पताल बालोद लेकर गए और डॉक्टर को दिखाए। दवा खाने के 10 दिन में ही युवती की स्थिति में सुधार होने लगा और एक माह की दवा खाने के बाद युवती की तबियत एकदम ठीक हो गई। अब युवती सभी से बातचीत करती है काम करने जाती है। अभी भी जिला अस्पताल में युवती का इलाज चल रहा है।

लिलेश्वरी साहू–एम.टी., माधुरी साहू–एस.पी.एस.

19. ग्राम–पुरियारा, पंचायत–करप, ब्लाक–नरहरपुर, जिला–कांकेर

गांव का 40 वर्षीय एक पुरुष विगत 10 वर्ष से मानसिक बीमारी से ग्रसित था। पूरे रात–दिन कहीं तालाब के अन्दर घुसकर रहना, ईट पत्थर मारना रोड के किनारे कई घंटों तक खडे रहना, गन्दे कपड़े पहनना, पैर मे बिना चप्पल के कहीं भी घुमना और कभी दातों की सफाई

नही करना। इस सबसे परिवार वाले बहुत परेशान थे। मितानिन और ग्राम स्वास्थ्य समिति के बैठक में मरीज के परिवार वालों को बुलाकर अस्पताल जांच के लिये ले जाने प्रेरित किया गया। परिवार वाले अस्पताल जाने तैयार हो गये। मितानिन गोमती तिवारी मरीज को जिला अस्पताल लेकर गयी व जांच करवाई। डॉक्टर के.के. धुव्र द्वारा मरीज की जांच के बाद उसे एक माह की दवाई दिया गया। मरीज एक माह के दवाई से ही पूरी तरह ठीक हो गया। अभी वह घर से बाहर नही रहता, घर के हर काम में हाथ बटाता है, अच्छे कपडे पहनता है, व्यवहार भी सामान्य लोगों की तरह करता है। घर वाले अभी भी उसकी निगरानी करते हैं। अब मरीज दवाई खत्म होने पर स्वयं से अस्पताल जाने की बात करता है परिवार वालों के द्वारा धन्यवाद दिया जा रहा है कि 10 वर्ष के बाद हमारे घर में खुशियां आई है। **कुमुदिनी गोस्वामी–एस.पी.एस.**

20. ग्राम–बम्हनी, जिला–राजनांदगांव

गांव की एक मितानिन की बेटी कक्षा 7वीं में पढ़ती थी। कोरोना के कारण लाकडाउन लग गया और बच्ची का स्कूल जाना बंद हो गया। वह दिन भर घर में रहने लगी। इसी तरह एक वर्ष बीत गया था। मितानिन ने धीरे–धीरे यह महसूस किया की उसकी बेटी के व्यवहार में धीरे–धीरे परिवर्तन आ रहा है। एक वर्ष के दौरान मितानिन की बेटी चिड़चिड़ाना, झगड़ना, अपने भाई–बहनों से मारपीट करना और सामान तोड़ना–फोड़ना आदि हरकतें करने लगी थी। इसी दौरान मितानिनों का मानसिक रोग पर प्रशिक्षण हुआ। मितानिन ने अपनी एम.टी. से अपनी बेटी के बारे में बात की और तुरंत जिला अस्पताल मनोरोग के डॉक्टर को दिखाने के लिए ले गयी। डॉक्टर ने बच्ची की जांच कर उसे दवा दी। 6 माह तक बच्ची का इलाज चला जिसमें बीच–बीच में उसे जांच के लिए अस्पताल ले जाया गया। 6 माह तक दवा खाने के बाद बिटिया बिलकुल ठीक हो गयी और डॉक्टर की सलाह पर दवाएं भी उसकी बंद कर दी गयी। अभी बिटिया ठीक है और घर में सबके साथ ठीक से व्यवहार और काम में हाथ बटाती है।

21. ग्राम–लिमो, जिला–राजनंदगांव

गांव का एक 32 वर्षीय युवक 6 साल पहले एल.आई.सी. के एजेंट के रूप में काम करता था और बहुत ही व्यवहार कुशल था। 6 साल पहले उसकी पत्नी उसे छोड़कर अपने मायके चली गयी उसके बाद से युवक मानसिक रूप से बीमार हो गया। युवक की स्थिति को देखते हुए ग्राम स्वाथ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति में युवक के इलाज के लिए चर्चा की गयी। समिति के द्वारा युवक के इलाज की जिम्मेदारी मितानिन को दी गयी और समिति के द्वारा युवक को मेडिकल कालेज राजनंदगांव ले जाने के लिए निजी गाड़ी की व्यवस्था की गयी। मेडिकल कालेज में युवक को डॉक्टर ने देखा और दवा चालू की। युवक नियमित दवा और जांच के लिए अस्पताल जा रहा है और पहले से उसके स्वास्थ्य में बहुत सुधार हुआ है।

गंगा बाई–मितानिन, नंदनी सही–एम.टी.

22. ग्राम पंचायत–खमरिया, विकासखंड–निकुम, जिला–दुर्ग

गांव में के 39 वर्षीय महिला के पति और बच्चों को कोरोना हो गया था। महिला इस बात से इतना डर गयी और इसके बारे में इतना सोचने लग गयी की उसने तीन बार अपना कोरोना की जांच करवा ली। जांच में नेगेटिव निकला तो झाड़फूंक करवाने लग गयी। धीरे–धीरे उसकी स्थिति बिगड़ने लगी और हाथ–पैर में ताकत नहीं रही और वह बिस्तर पकड़ ली। घर वालों ने महिला को उतई के संजीवनी अस्पताल में भर्ती किया वहां 12 हजार रुपये खर्च हुए और वह कुछ दिन ठीक रही लेकिन फिर बीमार हो गयी। महिला को फिर शंकराचार्य में भर्ती किया गया, यहां तीन दिन भर्ती रही और दो बार एम.आर.आई. करवाई परन्तु कुछ नहीं निकला। इसके बाद किसी निजी डॉक्टर को दिखाकर मानसिक रोग की दवा खाने लगी जिसे भी कुछ दिन बाद बंद कर दी। इसी बीच कोविड का टीका लगवाई और टीका लगवाने के बाद फिर से बीमार पड़ गयी तो मितानिन को बोलने लगी की कोविड का टीका लगने के कारण मेरी तबियत खराब हो गयी है। मितानिन ने महिला के बी.पी. की जांच की और उससे मानसिक रोग की दवा के बारे में पूछा तो उसने बताया की वह दवा नहीं ले रही है। मितानिन ने महिला को अपने हाथ से मानसिक रोग की दवा खिलाई और जिला अस्पताल में मानसिक रोग के डॉक्टर को दिखाई और 15 दिन की दवा दिलवाई। 15 दिन बाद फिर से उसे अपने साथ अस्पताल लेकर गयी और फिर से 10 दिन की दवा दिलवाई। महिला अभी ठीक है और उसे 10 दिन बाद फिर से डॉक्टर को दिखाना है।

23. ग्राम–बठेना, विकासखंड–पाटन, जिला–दुर्ग

मितानिन कार्यक्रम से जुड़ी एक हेल्पडेस्क फेसिलिटेटर एम.टी. बन गयी। एम.टी. बनने के बाद वह बार–बार यह बोलने लगी की उसे एम.टी. का काम नहीं करना है उसे हेल्पडेस्क फेसिलिटेटर का काम करना है, मैंने गलत फैसला लिया है आदि। धीरे–धीरे वह उदास, गुमसुम रहने लगी। उसे नींद व भूख नहीं लगती थी और तेज धड़कन की समस्या होने लगी थी। बी.एम.ओ. ने भी उसे काम के लिए बहुत प्रेरित किया। बी.सी. और एस.पी.एस. ने उसके भाई और पति को उसे मनोरोग होने की जानकरी दी गयी और अस्पताल में इलाज करवाने के लिए समझाया गया। घर वाले एम.टी. को इलाज के लिए अस्पताल लेकर गए और इलाज चालू किया गया। एम.टी. अभी बिलकुल ठीक है सब से अच्छे से बात करती है और काम अच्छे से कर रही है।

24. ग्राम पंचायत–तरकोरी, विकासखंड–धमधा, जिला–दुर्ग

गांव के एक 39 वर्षीय महिला के परिवार में पति और 5 बेटियां थी। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। सबसे छोटी बेटी की मृत्यु के बाद महिला खुद को नहीं संभाल पायी। वह चिड़चिड़ाने लगी, गाली देने लगी, बच्चों की देखभाल नहीं करती थी, खाना नहीं बनाती थी। महिला का पति ही उसे संभाल पाता था और कोई नहीं। महिला का पति एक निजी अस्पताल में इलाज करवाने लगा परन्तु पैसों की कमी की वजह से इलाज ज्यादा दिन तक नहीं करवा पाया। महिला की स्थिति और खराब हो गयी। इसी दौरान ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक की गयी और महिला के बारे में चर्चा की गयी। बैठक के बाद मितानिन और एम.टी. महिला के घर गए और उसके पति को

जिला अस्पताल में मानसिक रोग का इलाज मुफ्त में होने की जानकरी दी गयी और स्वयं जांच और इलाज में सहयोग करने की जानकरी दी गयी। महिला के पति के पास अस्पताल ले जाने के लिए भी पैसे नहीं थे तो समिति के द्वारा गाड़ी की व्यवस्था की गयी और महिला को मितानिन और एम.टी. जिला अस्पताल लेकर गए। जिला अस्पताल में डॉक्टर ने जांच कर महिला को दवा दी। दवा खाने के बाद से महिला की तबियत में सुधार हो गया। महिला अभी ठीक है, घर और बच्चों को पूरा संभालती है। रोजगार गारंटी में भी काम करने गयी थी।

25. ग्राम–कोदापाखा, विकासखंड–दुर्गकोंदल, जिला–कांकेर

गांव की एक 30 वर्षीय लड़की की मानसिक स्थिति पिछले 5–6 वर्षो से ठीक नहीं थी। वह सुबह 5 बजे नहाती थी और फिर सडक पर बैठ जाती थी। गांव में एक होटल था वहां पर वह अपने पिताजी से पैसे लेकर खाना खा लेती थी। दिन भर घर के बाहर रहती थी। गांव में जब बाजार लगता था तो वह बाजार में जाकर चूड़ी खरीदती थी और सामान लेने के बाद बोलती थी उसके पिताजी पैसे देंगे। गांव के लोग उसे कामचोर और पागलपन का नाटक करती है बोलते थे। लड़की के घर वाले भी ऐसा समझते थे। गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति का बैठक हुआ बैठक में मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा की गयी। बैठक के बाद मितानिन, एम.टी. और समिति के सदस्य लड़की के घर गये। एम.टी. और मितानिन ने लड़की के पिता को लड़की को अस्पताल ले जाने के लिए समझाया परन्तु उन्होंने कह दिया कि ये हमारे घर की समस्या है लड़की की मां भी मानसिक रोगी है और हमारे घर में किसी ने जादू–टोना कर दिया है वो अस्पताल के इलाज से ठीक नहीं होगा। एम.टी. और मितानिन वापस आ गए। इसी दौरान एक दिन एम.टी. संकुल बैठक के लिए जा रही थी तो मानसिक रोगी लड़की और उसके पिता घर के बाहर बैठे थे तो एम.टी. ने उन्हें फिर से समझाया की मानसिक रोग एक बीमारी है जिसका इलाज हो सकता है। एम.टी. ने उन्हें बताया कि सी.एच.सी. दुर्गकोंदल में मानसिक स्वास्थ्य पर शिविर लगने वाला है आप एक बार अपनी बेटी को वहां लेकर आना। लड़की के पिता ने बोला कि ठीक है मै आऊंगा। शिविर में लड़की को लाए और डॉक्टर ने जांच कर लड़की को दवा दी। मानसिक रोगी लड़की नियमित रूप से 2 माह तक दवा खाती रही और मितानिन भी दवा की निगरानी करती रही। दो माह बाद लड़की की स्थिति में बहुत सुधार हुआ। लड़की अब घर का काम करती है और सभी से अच्छे से बात करती है।

केशर सिन्हा–एम.टी.

26. बेसहारा मानसिक रोगी युवती का मितानिन ने इलाज करवाकर उसे सामान्य जीवन जीने में सहयोग किया

ग्राम पंचायत–रैरुमा, विकासखंड–धरमजयगढ़, जिला–रायगढ़

गांव में एक 19 वर्षीय गंभीर मानसिक रोगी थी जिसका घर में कोई इलाज करवाने वाल नहीं था। युवती के पिता जेल में है और वे भी मानसिक रोगी है और मां की मृत्यु हो चुकी है। एक भाई है जो सामान्य मानसिक रोगी है। गांव की मितानिन बाल कुमारी राठिया ने ग्राम स्वास्थ्य

स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में युवती के बारे में चर्चा की और उसे भाई के साथ इलाज के लिए जिला अस्पताल लेकर गयी। अस्पताल में युवती की जांच कर दवा दी गयी और आज वह युवती ठीक है और अपनी देखभाल खुद कर रही है। **हेमेश्वरी बघेल–एस.पी.एस.**

27. जिला अस्पताल में मानसिक रोगियों का इलाज होता है

ग्राम–आमापाली, पंचायत–राबो, जिला–रायगढ़

मितानिन ने अपने गांव में एक 55 वर्षीय व्यक्ति के लक्षण देखकर उसकी मानसिक रोगी के रूप में पहचान की। यह व्यक्ति अकेले में बड़बड़ाना, गाली–गलौच करना और कभी–कभी गुमसुम रहता था। मितानिन परिवार भ्रमण के दौरान इस मरीज के परिवार से मिलने गयी और उन्हें समझाया की अस्पताल में इस तरह के लक्षण के लोगों का इलाज होता है। परिवार वालों ने बोला की मरीज का इलाज कहीं और से चल रहा है। मितानिन ने परिवार वालों को फिर से समझाया की मरीज मानसिक रोगी है और मानसिक रोग का इलाज जिला अस्पताल में होता है और वह भी मुफ्त में। मरीज के परिवार वाले मितानिन की बात समझ गए और मरीज को जिला अस्पताल ले जाने के लिए तैयार हो गए। दूसरे दिन मितानिन मरीज को परिवार के लोगों के साथ जिला अस्पताल खरसिया लेकर गयी और मरीज की डॉक्टर से जांच करवाकर इलाज चालू करवाया। अभी वह मरीज पहले से थोड़ा ठीक है। **अन्नपूर्णा गुप्ता–मितानिन प्रशिक्षक**

28. मानसिक रोगी को इलाज के दौरान संभालना आसान नहीं होता है

ग्राम–कुसमेल, पंचायत–भगोरा, विकासखंड–तमनार, जिला–रायगढ़

मितानिन ने गांव के एक व्यक्ति जो कि अपने आप में बड़बड़ाता, किसी के साथ भी गाली–गलौच करता था की पहचान मानसिक रोगी के रूप में की। मानसिक रोगी की पहचान के बाद मितानिन ने मरीज के परिवार से मिलकर मानसिक रोग का जिला अस्पताल में इलाज की सुविधा के बारे में जानकारी दी। मरीज के परिवार वाले इलाज करवाने के लिए तैयार हो गए। परिवार वालों ने यह निर्णय लिया कि वे लोग मरीज को उड़ीसा के बुरला के अस्पताल में इलाज करवाएंगे। मरीज का अभी बुरला अस्पताल में इलाज चल रहा है और पहले से स्थिति में सुधार भी हुआ है। **गणेश चन्द्र राठिया**

29. मानसिक रोग पर जागरूकता का माध्यम बनी समिति

ग्राम–ठेमा, विकासखंड–नरहरपुर, जिला–कांकेर

गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में मानसिक रोग की पहचान और इलाज की पूरी जानकरी मितानिन और एम.टी. के द्वारा दी गयी। बैठक में उपस्थित एक परिवार के सदस्य ने बताया कि उनका बेटा पिछले 6–7 साल से मानसिक रोग से पीड़ित है। उस व्यक्ति ने बताया कि उनका बेटा घर से भागने की कोशिश करता है, गुमसुम रहता है और उनके द्वारा बेटे का इलाज और झाड़फूंक भी करवाया गया परन्तु केवल पैसा खर्चा हुआ बेटे की तबियत में कोई सुधार नहीं आया। मितानिन ने मरीज के माता–पिता को मानसिक रोग का

इलाज जिला अस्पताल में मुफ्त में होने की जानकरी दी और दूसरे दिन मरीज को अपने साथ जिला अस्पताल लेकर गयी। जिला अस्पताल में डॉक्टर ने मरीज की जांच कर एक सप्ताह की दवा दी। एक सप्ताह बाद मितानिन फिर से मरीज को जिला अस्पताल लेकर गयी तब डॉक्टर ने मरीज को एक माह की दवा दी। मितानिन इसी बीच मरीज के घर हालचाल जानने गयी तो परिवार वालों ने बताया कि अब उनका बेटा ठीक है। खाना–सोना सब समय पर करता है और खेत के काम में भी मदद करने लगा है।

दयावती वट्टी–मितानिन

30. मानसिक रोगी को दवा नियमित खाने की जरुरत होती है

ग्राम–सिंगनपुर, विकासखंड–नरहरपुर, जिला–कांकेर

गांव की एक 43 वर्षीय महिला गत 7 वर्षो से मानसिक रोग से पीड़ित थी। यह महिला बीमारी की स्थिति में गांव–गांव में घुमती रहती थी। महिला की स्थिति को देखते हुए एक व्यक्ति ने महिला को बिलासपुर अस्पताल में इलाज के लिए भेज दिया। कुछ दिन इलाज के बाद महिला ठीक हो गयी और वापस घर आ गयी। महिला 2 साल तक ठीक रही उसके बाद उसने दवा खाना बंद कर दिया तो फिर से उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ने लगी। मितानिन को जैसे ही पता चला तो ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में कार्ययोजना बनायी और महिला को जिला अस्पताल जांच के लिए भेजा गया। जिला अस्पताल में जांच के बाद महिला को फिर से दवा दी गयी और परिवार के सदस्यों को समय पर दवा खिलाने के लिए कहा गया। 2 माह तक दवा खाने के बाद महिला बिलकुल ठीक हो गयी और अब रोजी मजदूरी के लिए भी जाने लगी है।

रुपेश्वरी शोरी–मितानिन

31. मितानिनों के द्वारा मानसिक रोगियों को अस्पताल ले जाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है (ग्राम–खट्टी, विकासखंड–अभनपुर, जिला–रायपुर)

दिनांक 19.08.2021 को ग्राम खट्टी की एम.टी. ने मानसिक रोगियों को जिला अस्पताल ले जाने के लिए 108 को फोन किया परन्तु किसी ने फोन नहीं उठाया तो मितानिन प्रशिक्षक ने ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के आर्थिक सहयोग से दो निजी वाहन कर तीन गांव से 11 मानसिक रोगियों को जिला अस्पताल लेकर गयी। जिला अस्पताल पहुंचने पर पता चला कि डॉक्टर तो छुट्टी पर है और 24 तारीख को मिलेंगे। एम.टी. को बहुत निराशा हुई क्योंकि एक साथ इतने मानसिक रोगियों को संभालना थोड़ा कठिन होता है। एम.टी. ने अपनी बी.सी. को फोन किया और जानकरी दी। बी.सी. ने जिला अस्पताल के डॉक्टर परिहार को फोन कर मरीजों के अस्पताल में होने की जानकरी दी। डॉक्टर परिहार मीटिंग में थे उन्होंने मीटिंग से छुट्टी ली और जिला अस्पताल आकर एक–एक मरीज के साथ अच्छे से समय देकर काउंसलिंग की और सभी को दवा लिखकर दी। अभी सभी मरीज दवा खा रहे हैं और कुछ की तबियत में पहले से सुधार भी हुआ है।

तुलसी मेश्राम–एम.टी.

32. मितानिन के निरंतर प्रयास से मानसिक रोगी महिला ठीक हुयी

ग्राम–लोहारबाई, विकासखंड–बसना, जिला–महासमुंद

गांव में रहने वाली एक महिला के व्यवहार और कार्यों को देखकर मितानिन को समझ में आया की इस महिला को मानसिक रोग हो गया है। वह महिला हमेशा यह बोलती रहती थी कि उसके पीछे से कोई आ रहा है कोई उसके आगे खड़ा है। मितानिन ने जिला अस्पताल के काउन्सलर खूंटे को फोन किया और उस महिला के बारे में बताया। खूंटे ने महिला को अस्पताल लाने के लिए कहा तो मितानिन महिला को जिला अस्पताल लेकर गयी और डॉक्टर ने जांच कर महिला को मानसिक रोग बताया और दवा चालू की। महिला अभी रोज दवा खा रही है और उसकी मानसिक स्थिति में पहले से बहुत सुधार हुआ है।

मधुकला–मितानिन

33. मितानिन के प्रयास से मानसिक रोगी मां स्वस्थ हुयी

ग्राम पंचायत–ढेड़कोहका, विकासखंड–चारामा, जिला–कांकेर

25 वां चरण प्रशिक्षण में मानसिक स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण के बाद एफ.सी. और एस. पी.एस. के द्वारा ग्राम कसावाही में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा की गयी। बैठक में चर्चा के दौरान एम.टी. ने अपने क्षेत्र में 3 मानसिक रोगी होने की जानकारी दी। एस.पी.एस., एम.टी. और मितानिन के द्वारा तीनों मानसिक रोगियों को जिला अस्पताल में इलाज के लिए ले जाना तय किया गया। एम.टी. के पास जिला अस्पताल के मानसिक रोगियों के डॉक्टर का फोन नंबर था तो उसके द्वारा डॉक्टर से मरीजों को दिखाने के लिए कब आ सकते हैं पूछा गया। डॉक्टर ने दूसरे दिन आने के लिए कहा। मितानिन को तीन गांव से मरीजों को ले जाते दोपहर के 1 बज गए थे। मितानिन मरीजों के साथ जैसे ही अस्पताल पहुंची उसी समय डॉक्टर बाहर जा रहे थे और उन्होंने कहा मैं 5 बजे आऊंगा तब तक रुकना। डॉक्टर का इंतजार करते–करते 6 बज गया पर डॉक्टर नहीं आये। इतनीं देर मानसिक रोगियों को संभालना बहुत मुश्किल था पर मितानिन ने उन्हें संभाला और फिर बिना डॉक्टर को दिखाए उन्हें वापस 8 बजे गांव लेकर आ गयी। दूसरे दिन एम.टी. बैठक में एम.टी. ने मानसिक रोगियों की जांच नहीं किये जाने की जानकारी विषय पर कलेक्टर को आवेदन लिखी। मितानिन ने दूसरे दिन कलेक्टर को आवेदन दिया और तीनों मानसिक रोगियों को जिला अस्पताल जांच के लिए लेकर गयी। जिला अस्पताल में तीनों मानसिक रोगियों की उस दिन जांच की गयी। उसी प्रकार ग्राम ढेड़कोहका की एक मानसिक रोगी महिला है जो कि गर्भावस्था के समय से अपने आप को जनपद की मैडम हूं बताती थी और रोज सुबह तैयार होकर पैदल चारामा जाती थी और वापस आती थी। प्रसव के बाद अपने बच्चे का भी ध्यान नहीं रखती थी। मितानिन ने उस महिला को जिला अस्पताल में इलाज चालू करवाया। 15 दिन में महिला स्वस्थ हो गयी। स्वस्थ होने के बाद महिला ने रोजगार गारंटी में काम किया, तेंदूपत्ता इकट्ठा किया और अब अपने बच्चे को भी अच्छे से देख रही है।

भानवती–मितानिन, लक्ष्मी–मितानिन प्रशिक्षक

34. मितानिन ने 12 वर्षीय मानसिक रोगी बालिका की इलाज में मदद की

ग्राम पंचायत–सोखागुढ़ा, विकासखड़–धरमजयगढ़, जिला–रायगढ़

गांव में एक 12 वर्षीय किशोरी अपने घर से बिना बताए कहीं भी चली जाती थी कई बार तो वह गांव से भी बाहर चली जाती थी। किशोरी से कोई कुछ बात करता था तो वह उसका जवाब नहीं देती थी। मितानिन ने प्रशिक्षण के बाद किशोरी की स्थिति का देखते हुए समझ गयी की किशोरी मानसिक स्वास्थ्य से पीड़ित है। मितानिन ने किशोरी के परिवार से चर्चा की और उन्हें समझाया की आपकी बेटी को मानसिक रोग हो गया है जिसका इलाज जिला अस्पताल में होता है। परिवार वाले मितानिन की बात नहीं मान रहे थे। मितानिन ने फिर अपनी एम.टी. से सहयोग मांगा। मितानिन प्रशिक्षक और मितानिन किशोरी के परिवार को बार–बार समझाते रहे तब वे किशोरी के इलाज के लिए माने और रायगढ़ अस्पताल इलाज के लिए लेकर गए। किशोरी अभी ठीक है अपना सभी काम करने लगी है और घर से बाहर जाती है तो घर वालों को बता कर जाती है। किशोरी का इलाज अभी चल रहा है आशा है वह जल्द ही पूरी तरह स्वस्थ हो जाएगी।

35. समिति ने मानसिक रोगी की पहचान कर इलाज करवाया

ग्राम पंचायत–सिंधौरी, विकासखंड–महासमुंद, जिला–महासमुंद

गांव में एक परिवार अपने दो बेटों और माता पिता के साथ रहते थे। कुछ समय पहले पिता अपने परिवार के साथ कमाने के लिए रायपुर में रहने लगा। रायपुर में आने के बाद उनके छोटे बेटे को नशे की आदत लग गयी और वह छुप–छुप कर नशा करता था। एक दिन पिता को जब यह पता चला तो उसने अपने बेटे को बहुत मारा परन्तु फिर भी बेटा बाथरूम में छुप कर नशा करता था। इस बीच पिता की मृत्यु हो गयी तो पूरा परिवार अंतिम क्रियाकर्म के लिए गांव आ गया। पिता के मरने से उसके छोटे बेटे पर बहुत मानसिक प्रभाव पड़ा। गांव में पूरा कार्यक्रम होने के बाद मां अपने बड़े बेटे के साथ रायपुर आ गयी और छोटे बेटे को दादी के पास छोड़ दी। गांव में छोटा बेटा अपनी दादी को बहुत परेशान करता था, खाना नहीं पीना नहीं सोना नहीं बस पूरे समय बाहर घूमते रहता था और नशा करता रहता था। इसी दौरान गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक की गयी। बैठक में मानसिक रोग पर चर्चा की गयी और गांव में मानसिक रोगियों की पहचान की गयी तो समिति के सदस्यों ने छोटे बेटे का नाम बताया। बैठक में लड़के की दादी को बुलाया गया और समझाया गया कि जिला अस्पताल में आपके पोते का इलाज हो जाएगा। दूसरे दिन लड़के को जिला अस्पताल ले कर गया और डॉक्टर ने लड़के की जांच कर दवा दी। थोड़े दिन में ही लड़का ठीक हो गया और अब सारा काम ठीक तरीके से करने लगा है। डॉक्टर ने दवा लंबे समय तक चलेगी और लड़का पूरी तरीके से ठीक हो जाएगा बताया गया। लड़के की दादी ने समिति की बैठक में आकर सभी को बहुत धन्यवाद दिया।

एस.पी.एस.–हेमवती

36. नींद नहीं आने की बीमारी से तनावग्रस्त महिला का मितानिन ने इलाज करवाया (ग्राम–मोखेतरा, विकासखंड–अभनपुर, जिला–रायपुर)

गांव की ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक की गयी जिसमें मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा की गयी। बैठक में उपस्थित एक महिला ने बताया की दो माह से उसे नींद नहीं आने की समस्या हो रही है वह 3–4 दिन सोती नही है जिसकी वजह से उसे तनाव हो रहा है। मितानिन ने महिला को बताया की पी.एच.सी. तोरला में डॉक्टर को दिखाने से आपकी नींद नहीं आने और तनाव की बीमारी ठीक हो जाएगी। दूसरे दिन मितानिन ने पी.एच.सी. तोरला के डॉक्टर को फोन कर महिला के बारे बताया और महिला को अपने साथ पी.एच.सी. तोरला लेकर गयी। पी.एच.सी. के डॉक्टर ने महिला की जांच की और दवा दी जिसे खाने के बाद से महिला ठीक है और डॉक्टर के द्वारा जांच के लिए जब भी बुलाया जाता है वह जाती है।

पुष्पलता साहू–एम.टी.

37. सरकारी अस्पताल में मानसिक रोग का इलाज संभव है ग्राम–मुड़खुसरा, विकासखंड–डौंडीलोहारा, जिला–बालोद

गांव के एक व्यक्ति अपने आप में बड़बड़ाता रहता था, घर वालों से किसी भी बात के लिए जिद करता रहता था, अपनी पत्नी और बच्चों के साथ झगड़ता रहता था, घर का सामान बाहर फेंकता रहता था और घर के बाहर किसी भी समय निकल जाता था। घर वाले उस व्यक्ति की इन सब आदतों से डरने लगे थे और परेशान हो गए थे। एक दिन उनकी बसाहट की मितानिन और मितानिन प्रशिक्षक उनके घर आये और उस व्यक्ति की स्थिति की पूरी जानकरी लिए। मानसिक रोगी व्यक्ति के बारे में पूरी जानकरी लेने के बाद मितानिन ने व्यक्ति के परिवार वालों को बताया कि सरकारी अस्पताल में मानसिक रोगी मरीज का पूरा इलाज मुफ्त में होता है। घर वाले व्यक्ति का इलाज करवाने के लिए तैयार हो गए और उसे पी.एच.सी. सेंटर लेकर गए। सेक्टर प्रभारी के द्वारा व्यक्ति की जांच की गयी और दवाई चालू की गयी। दवा लेने के बाद से वह व्यक्ति अपने से सारा काम करने लगा है और भोजन और सोना समय पर करने लगा है।

अंकालू राम कोसमा–मितानिन प्रशिक्षक

38. लोग मानसिक स्वास्थ्य को जादू टोना समझते हैं वार्ड क्र. 30, उरला पारा, शशि नगर, चरौदा

पारा में महिला आरोग्य समिति की बैठक रखी गयी। बैठक में मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा की गयी। बैठक के दौरान एक महिला सदस्य ने बताया की पारा में एक महिला है जिस पर पिछले तीन चार महीने पहले किसी ने जादू टोना कर दिया था और वह बहतु परेशान है। समिति के सदस्य मितानिन के साथ उस महिला के घर गए और परिवार वालो से मिले। महिला के परिवार वालो ने बताया कि वह महिला नींद नहीं आना. अपने आप में बड़बड़ाना, गाली देना करती रहती है। परिवार वालों ने बताया कि महिला का कई जगह झाड़फूंक करवाए और उसमे 60–70 हजार

रूपए खर्च कर चुके है। मितानिन ने उन्हें समझाया की ऐसे मरीजों का इलाज हो जाता है और एक बार जिला अस्पताल चलने के लिए कहा। मितानिन दो बार उनके घर जाकर उन्हें समझाई तो वे लोग मरीज को जिला अस्पतल में दिखाने के साथ ही एम्स में दिखाएंगे बोले। मितानिन ने बोला आप लोग एम्स भी जा सकते हैं। मितानिन उनके साथ अस्पताल गयी और मरीज की जांच में सहयोग की। दवा खाने के बाद मरीज में बहुत सुधार आया है। मंजू लता बेहरा–मितानिन

39. मितानिन ने मानसिक रोगी की पहचान कर उसका इलाज करवाया

वार्ड क्रमांक 66, बांकी, मोंगरा शांति नगर, कोरबा

एक व्यक्ति काम के लिए बिलासपुर गया था। उसके ऊपर काम का बहुत बोझ था। जब वह व्यक्ति घर लौटा तो वह पागल जैसे करने लग गया था। घर वाले झाड़फूंक करवाने लग गए। वह व्यक्ति पर झाड़फूंक का कोई फायदा नहीं हुआ तो मितानिन ने उस व्यक्ति के परिवार वालों को समझाया की मानसिक रोग का इलाज झाड़फूंक नहीं अस्पताल में जांच व इलाज करवाना पड़ता है। मितानिन उस व्यक्ति को कोरबा जिला अस्पताल लेकर गयी और उसका इलाज चालू करवाया। सही इलाज से वह व्यक्ति धीरे–धीरे पूरी तरह ठीक हो गया।

रीना विश्वकर्मा–मितानिन

(इस दस्तवेज में मरीज के नाम की गोपनीयता रखी गयी है।)

नवापारा पीएचसी में 200 लोगों का किया गया मानसिक उपचार

अम्बिकापुर। छ.ग. फ्रंटलाइन। अम्बिकापुर के नवापारा स्थित शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित ओपीडी में अब तक 200 लोगों ने मानसिक परेशानियों का ईलाज कराया है। इस ओपीड़ी मे मानसिक परेशानियां जैसे अवसाद, थकान, चिड़चिड़ा, गुस्सा, सुसाइड की कोशिश, नींद नहीं आना, नशा लत आदि के लिए विशेष उपचार किया जा रहा है। यहाँ सभी उपचार और दवा नि:शुल्क उपलब्ध है।

प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ आयुष जायसवाल ने बताया कि स्वास्थ्य मंत्री श्री टी एस सिंहदेव के निर्देशानुसार पिछले माह से मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नवापारा अंबिकापुर में संचालित किया जा रहा है। उन्होंने बताया की शुरू में ओपीड़ी की जानकारी नहीं होने पर कम लोग ईलाज कराने आते थे लेकिन अब प्रतिदिन 30 से 35 लोग आ रहे है।

मानसिक स्वास्थ्य विषय पर दिया प्रशिक्षण

नवभारत कार्यालय। महासमुंद.
www.navbharat.news

ग्राम पं. सिरपुर में मानसिक स्वास्थ्य जन-जागरूकता अभियान के तहत चौपाल का आयोजन किया गया. यह कार्यक्रम डॉ. एनके मंडपे एवं डॉ. छत्रपाल चन्द्राकर के निर्देशन में किया गया. प्रथम पाली में शा. उ. मा. वि. में वाद-विवाद स्पर्धा में 340 बच्चों ने हिस्सा लिया. जिसमें 7 छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मान किया गया. द्वितीय पाली में चौपाल कार्यक्रम आयोजित किया गया. जिसमें 11 मानसिक रोगियों की जांच कर परामर्श दिया. तीसरी पाली बस स्टैंड, झूला घर में चौपाल कार्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य जन जागरूकता अभियान चलाया गया. ऐसे मरीज जिसका इलाज चल रहा था. जो लगभग ठीक हो रहे हैं. उनसे रुबरु कर साझा कराया गया. मितानिन कार्यक्रम एवं महिला बाल विकास केंद्र के तहत आंगनबाडी कार्यकर्त्ता को चौपाल कार्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य के विषयों प्रशिक्षण दिया गया. जिनका मानसिक मंदता का प्रमाण पत्र नहीं बना है. उन्हें जिला मेडिकल बोर्ड में बुधवार को आने परामर्श दिया गया. इस अवसर पर योगा प्रशिक्षण भी दिया गया. रामगोपाल खूंटे, सुश्री टीकेश्वरी गोस्वामी, कु जागृति साहू स्टाफ नर्स, देव कुमार डडसेना योगा प्रशिक्षक और मितानिन, मितानिन प्रशिक्षक भुनेश्वरी ध्रुव, जम्बा ध्रुव, संतोषी ध्रुव, मन टोरिया आंगनबाडी कार्यकर्ता उपस्थित थे.

स्वस्थ तन-स्वस्थ मन: हाल ही में बकावंड ब्लॉक में 60 लोगों की जांच के दौरान हुआ खुलासा

मानसिक स्वास्थ्य जांच में 23% मनोविकृति, 20% मानसिक विकार और 12% डिप्रेशन के मरीज मिले

बस्तर में ग्रामीण इलाकों में भी लोग डिप्रेशन और एक्यूट साइकोसिस और सिजोफ्रेनिया जैसे बीमारी से पीड़ित

पत्रिका खुलासा

एक्सपर्ट ने कहा मानसिक विकार से ग्रसित व्यक्ति झाड़-फूंक के चक्कर में न फंसे

शिविर में पहुंचे लोगों में दिखी ये बीमारी

लगातार चल रहा है जांच शिविर

सही समय पर इलाज जरूरी, नहीं तो शरीर पड़ता है गंभीर प्रभाव

यह हैं मानसिक तनाव के लक्षण

22 मानसिक रोगियों का किया इलाज

अंतागढ। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र अंतागढ में कल मानसिक रोग से पीड़ित 22 रोगियों का कांकेर से आये डॉक्टरों के द्वारा इलाज किया गया। बता दें कि अंतागढ ब्लॉक से करीब 22 मानसिक रोगियों का इलाज कांकेर से आये डॉक्टरों के द्वारा अंतागढ के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में किया गया और एक माह का दवाई देकर साथ मे मानसिक रोगियों के परिवार के सदस्य का मोबाइल नंबर लेकर बीच बीच में रोगी के बारे में जानकारी देने और डॉक्टर की सलाह लेने कहा गया है। मितानिन और एम टी व बीसी के अथक प्रयास से ही यह संभव हो पाया है। मानसिक रोगियो के घर जाकर उनको प्रेरित किया गया जिससे उनके घर वाले मान गए और रोगी को साथ लेकर अंतागढ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे। जहां उनका इलाज किया गया और आर्थिक मदद भी विभाग के द्वारा किया गया। इस कार्य के लिए मितानिन, एम टी, बीसी का बहुत बड़ा योगदान है जो सराहनीय है।